OUR PUBLICATIONS

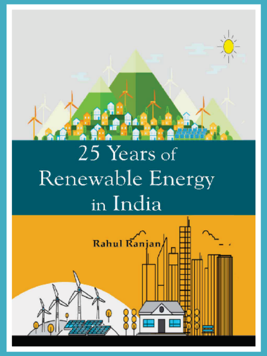
25 Years of Renewable Energy in India
Rahul Ranjan

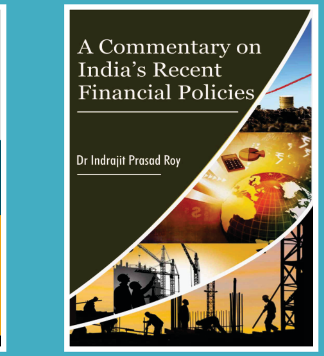
A Commentary on India's Recent Financial Policies
Dr Indrajit Prasad Roy

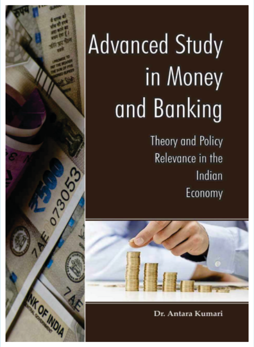
Advanced Study in Money and Banking
Theory and Policy Relevance in the Indian Economy
Dr. Antara Kumari

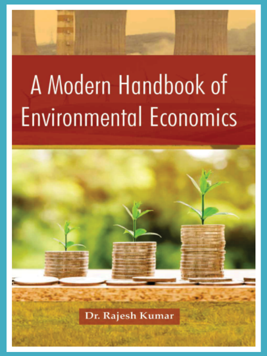
A Modern Handbook of Environmental Economics
Dr. Rajesh Kumar

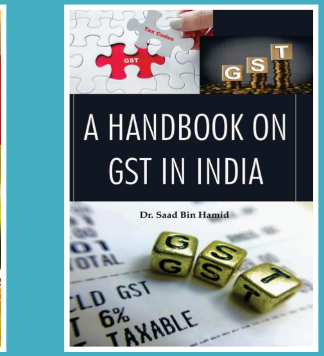
A HANDBOOK ON GST IN INDIA
Dr. Saad Bin Hamid

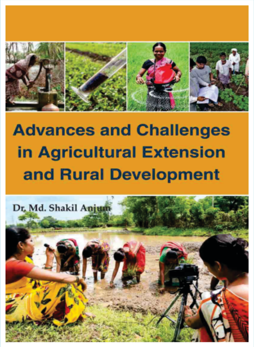
Advances and Challenges in Agricultural Extension and Rural Development
Dr. Md. Shakil Anjum

INNOVATION AND ENTREPRENEURSHIP
Jaya Kumari Pandey

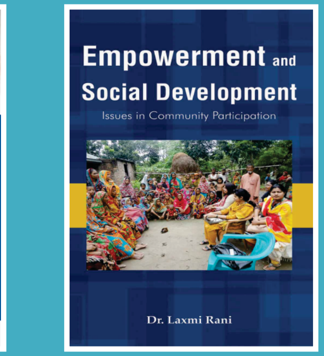
Empowerment and Social Development
Issues in Community Participation
Dr. Laxmi Rani

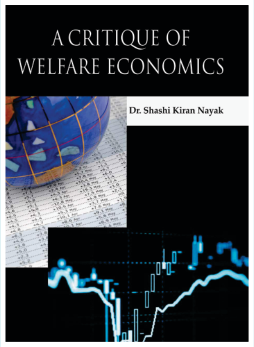
A CRITIQUE OF WELFARE ECONOMICS
Dr. Shashi Kiran Nayak

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक
डॉ. अश्विनी महाजन
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक
प्रो. प्रसून दत्त सिंह
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी
डॉ. फूल चन्द
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 **अंक :** 1 ❑ जनवरी-फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com
©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

पूरे देश की निगाहें एक फरवरी 2021 को संसद में पेश होने वाले बजट पर लगी हैं। यूं तो बजट के बारे में हर बार ही उत्सुकता होती है, कि वित्तमंत्री के पिटारे में विभिन्न वर्गों के लिए क्या योजनाएं हैं? क्या सरकार आयकर में कोई छूट देगी? कारपोरेट टैक्स के बारे में सरकार का क्या नजरिया रहेगा? देशी और विदेशी निवेशकों पर क्या कर प्रावधान होंगे? बजट का शेयर बाजारों पर क्या असर पड़ेगा? शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, बैंकिंग आदि के बारे में क्या नजरिया होगा? कौन सी नई जनकल्याणकारी योजनाएं होंगी?

लेकिन हमें समझना होगा कि इस बार का बजट एक महामारी के बाद का बजट है। पिछली एक सदी के बाद पहली बार ऐसी महामारी आई, जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। हालांकि भारत में इस बाबत हालात (केरल और महाराष्ट्र को छोड़कर) सुधरे हुए दिखाई देते हैं, लेकिन इस महामारी के कारण हुए नुकसानों की भरपाई बहुत जल्द होने वाली नहीं है। पिछले वर्ष हमने देखा कि कैसे महामारी के कारण आवाजाही बाधित हुई, जिसके कारण न केवल मांग बाधित हुई, काम-धंधों पर भी जैसे ब्रेक लग गया। कुछ व्यवसायों में घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) थोड़ी-बहुत मात्रा में चला, लेकिन अधिकांश मामलों में आर्थिक गतिविधियां पूरे या अधूरे तौर पर बाधित रही। मजदूरों का बड़े शहरों से पलायन, कामगारों का काम से निष्कासन या उनके वेतन में भारी कटौती, इस महामारी के कालखंड में सामान्य बात बन गई। ऐसे में जीडीपी के प्रभावित होने के साथ-साथ, सरकार का राजस्व भी प्रभावित हुआ।

महामारी से पूर्व भी अर्थव्यवस्था कई कारणों से मंदी की मार झेल रही थी। पूर्व में बैंकों द्वारा दिए गए ऋणों की वापसी नहीं होने के कारण, बैंकों के बढ़ते एनपीए के चलते बैंकों का मनोबल ही नहीं गिरा था, लोगों का बैंकों पर विश्वास भी घटने लगा था। उसके साथ ही साथ आईएलएफएस सरीखे गैरबैंकीय वित्तीय संस्थानों में घोटालों के कारण वित्तीय क्षेत्र के संकट और अधिक बढ़ गए थे। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों पर नकेल कसने के प्रयासों में बैंकों द्वारा कार्य निष्पादन भी प्रभावित हो रहा था और व्यवसाय भी। बैंकों द्वारा ऋण भी कम मात्रा में दिए जा रहे थे। कुल मिलाकर नए निवेश भी घटे और चालू आर्थिक गतिविधियां भी। कठिन परिस्थितियों में जब पिछले साल वित्तमंत्री ने बजट पेश किया था, वर्ष 2019-20 में राजस्व उम्मीद से कम दिखाई दिया था लेकिन यह अपेक्षा जरूर थी कि इसकी भरपाई 2020-21 में हो सकेगी।

लेकिन उसके पश्चात वर्ष 2020-21 में भी महामारी के प्रकोप ने राजस्व में सुधार की सभी अपेक्षाओं पर पानी फेर दिया है। वित्तीय वर्ष 2020-21 के पहले 9 महीनों में जीएसटी से कुल राजस्व 7,79,884 करोड़ रूपए ही प्राप्त हुआ है, जबकि इस कालखंड में अपेक्षा न्यूनतम 10 लाख करोड़ रूपए की थी। जीएसटी में इस कमी का असर हालांकि केन्द्र और राज्य, दोनों के राजस्व पर पड़ा है, लेकिन राज्यों के हिस्से की भरपाई (14 प्रतिशत वृद्धि के साथ) देर-सबेर केन्द्र सरकार को नियमानुसार करनी ही पड़ेगी। इस कारण केन्द्र को इसका नुकसान राज्यों से कहीं ज्यादा होगा। दूसरे इस वर्ष वैयक्तिक आयकर और निगम (कारपोरेट) कर भी उम्मीद से कम रहने वाला है। सरकार के इस वर्ष का विनिवेश का लक्ष्य भी पूरा होने की दूर-दूर तक कोई संभावना दिखाई नहीं देती।

एक तरफ जहां महामारी के चलते सरकारी राजस्व में भारी नुकसान हो रहा था, रोजगार खोने के कारण भारी संकट से गुजर रहे मजदूरों और अन्य प्रभावित वर्गों के जीवनयापन की कठिनाईयों के कारण उन्हें खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने हेतु सरकार का दायित्व तो था ही, गांवों में लौट रहे मजदूरों को रोजगार दिलाने का भी दबाव था। 80 करोड़ लोगों को लगभग 9 महीने तक मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया गया। महामारी से निपटने हेतु सरकार का स्वास्थ्य पर खर्च भी बढ़ चुका था। महामारी से पार पाने हेतु कोरोना योद्धाओं, शिक्षकों एवं अन्य वर्गों को वैक्सीन उपलब्ध कराने की भी आवश्यकता है।

महामारी के कारण बाधित गतिविधियों को दुबारा शुरू करने की भी जरूरत थी। यह सरकार की मदद के बिना नहीं हो सकता था। पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हुई आर्थिक गतिविधियों को पुन: पटरी पर लाना, महामारी की मार झेल रही आम जनता को राहत देना, रोजगार खोने वालों के लिए राहत और रोजगार की व्यवस्था करना, पहले से ही मंदी की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाना, यह सरकार का दायित्व भी है और प्राथमिकता भी।

दुनिया भर में सरकारों ने इस महामारी से निपटने के लिए राहत पैकेजों की व्यवस्था की है। उसी क्रम में भारत सरकार ने भी अपने सभी राहत उपायों की घोषणा की है। ये सभी राहत उपाय कुल मिलाकर देश की जीडीपी के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर बताए जा रहे हैं। इन राहत अथवा प्रोत्साहन पैकेजों में सरकार ने लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहन, प्रवासी मजदूरों एवं किसानों के लिए राहत पैकेज, कृषि विकास, स्वास्थ्य उपायों, व्यवसायों को अतिरिक्त ऋणों की व्यवस्था, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस समेत कई उपायों की घोषणा की गई है। सरकार ने हाल ही में रियल ईस्टेट क्षेत्र को राहत एवं प्रोत्साहन देने, इलैक्ट्रॉनिक्स, टेलीकॉम, मोबाईल फोन और एक्टिव फार्मास्यूटिकल उत्पादों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु 'प्रोडक्शन लिंक्ड' प्रोत्साहनों की भी घोषणा की है।

पिछले साल का बजट प्रस्तुत करते हुए, वित्तमंत्री ने वर्ष 2020-21 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी को 3.5 प्रतिशत रखा था। लेकिन बदले हालातों में घटे सरकारी राजस्व और बजट अनुमानों से कहीं ज्यादा खर्च के दबाव के चलते इस वर्ष का राजकोषीय घाटा अनुमान से कहीं ज्यादा हो सकता है। माना जा रहा है कि इस महामारी का बड़ा असर राजकोषीय घाटे पर पड़ सकता है। माना जा रहा है कि वर्ष 2020-21 के लिए यह राजकोषीय घाटा जीडीपी के 8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

महामारी से निपटने हेतु राहत के प्रयासों की अभी शुरूआत भर हुई है। आगामी वर्ष में इन प्रयासों को और आगे बढ़ाने की जरूरत होगी। सरकार द्वारा आत्मनिर्भरता के संकल्प और अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु तमाम प्रयासों के चलते अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी इस वर्ष भारत की जीडीपी में 11.5 प्रतिशत संवृद्धि का अनुमान दिया है। इसके चलते राजस्व में वृद्धि तो होगी, लेकिन सरकार को जीडीपी ग्रोथ की इस गति को बनाए रखने के लिए और अधिक प्रयास करने की जरूरत होगी। ऐसे में केन्द्र सरकार का राजकोषीय घाटा अधिक रहेगा। लेकिन इसके साथ ही साथ केन्द्र सरकार ने कोरोना से उपजी समस्याओं से निपटने हेतु राज्य सरकारों को भी अतिरिक्त ऋण लेने के लिए अनुमति दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वर्ष राज्यों के बजट में भी राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4 से 5 प्रतिशत के बीच रह सकता है। ऐसे में देश में कुल राजकोषीय घाटा 10 से 11 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

लेकिन समय की मांग है कि अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु सभी प्रकार के प्रयास किए जाएं। कुछ समय तक एफआरबीएम एक्ट को स्थगित रखते हुए देश की अर्थव्यवस्था को गति देना जरूरी होगा। वित्तमंत्री इस बात को समझती हैं और आशा की जा सकती है कि जहां महामारी से प्रभावित वर्गों को सरकारी बजट का समर्थन मिलेगा, अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु प्रयासों में कोई कंजूसी नहीं की जाएगी। वर्षों से चीन से सस्ते आयातों की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता और 'वोकल फॉर लोकल' का संकल्प एक नई दिशा और ऊर्जा देगा और यह बजट उस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

संपादक

इस अंक में

स्वामी विवेकानंद का व्यंजन प्रेम–डॉ० अमरेन्द्र कुमार 1
महात्मा गाँधी के भारत में शुरूआती दौर के आन्दोलन (1917-1918)–मोहन लाल 4
अमरकांत का उपन्यास साहित्य : अभिव्यक्ति कौशल संबंधी परम्परागत एवं नवीन प्रयोगों की अवधारणा
–डॉ० यदुवीर सिंह खिरवार; श्रीमती रेणु बाई 8
नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा कि उपादेयता–डॉ० उषा नागर 13
पुलिस प्रशासन-संगठन, समस्या और सुझाव–डॉ० शेषाराम मीणा 18
वैदिक वाङ्मय में अर्थचिन्तन–डॉ० आशा सिंह रावत 23
नाटककार भवभूति की कृतियों में पर्यावरण चिन्तन–डॉ० बाबूलाल मीना 30
गाँधी के सर्वोदय दर्शन में विकेन्द्रीकरण की अवधारणा–आशीष कुमार सिंह 36
राजनीतिक सामाजीकरण एवं विकास : एक अध्ययन–कृष्णा बैठा 39
सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक वातावरण का छात्रों की अध्ययन आदतों के संबंध का अध्ययन–मनु सिंह; डॉ० मंजू शर्मा 44
ग्रामीण महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता की समीक्षा–किरण कुमारी; डॉ० संजय बुंदेला 48
महिलाओं द्वारा अपने प्रति होने वाले अपराधों के प्रतिकार की स्थिति–श्रीमती श्वेता चतुर्वेदी; डॉ० श्रीमती रीना तिवारी 51
बौद्धिक सम्पदा का अधिकार और इसके संरक्षण के प्रयास–जितेन्द्र भारती 55
वेदों में ज्योतिर्विज्ञान–डॉ० भगवानदास जोशी 58
नई शिक्षा नीति में गृह विज्ञान शिक्षा का भविष्य–डॉ० आभा रानी 63
शैक्षिक नीतिशास्त्र का स्वरूप और विचार–अजय कुमार पटेल 66
अमरकंटक अंचल में पर्यटन की संभावना एवं विकास–निर्मला तिवारी; डॉ० रीता पाण्डेय; प्रो० आभा रूपेंद्र पाल 69
बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास–शशि शेखर द्विवेदी; मनीष कांत 78
मुगलकालीन विदेशी यात्रियों की दृष्टि में भारतीय महिलाओं की स्थिति–आशु त्यागी 84
स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 88
मुक्ति प्राप्ति का भक्ति-मार्ग–डॉ० सुनील कुमार शुक्ल 90
विश्वशान्ति: स्वधर्म एक माध्यम–डॉ० क्षमा तिवारी 93
उ०प्र० में बौद्ध स्थलों पर पर्यटन प्रतिरूप का एक प्रतीक अध्ययन–डॉ० अनूप कुमार सिंह 97
संयुक्त राष्ट्रसंघ और सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० लवलेश कुमार 101
हिन्दी उपन्यासों में चित्रित जनजातीय जीवन में बंधुआ मजदूरी एवं बेगारी की समस्या–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 103
प्राथमिक शिक्षक एवं कक्षा-कक्ष : एक चुनौती–डॉ० राकेश कुमार डेविड; डॉ० संजीत कुमार साहू; डॉ० शोभना झा 106
कोरोना वैश्विक महामारी के काल में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–अर्चना कुमारी 109
'समकालीन सामाजिक परिदृष्य में प्रत्ययवाद का महत्व'–डॉ० ब्रिजेन्द्र कुमार त्रिपाठी 112
आधुनिक समाज में माता-पिता की महत्वाकांक्षा और बच्चों की मानसिक स्थिति: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ० रूमा कुमारी सिन्हा 114
लाल शकरकंद : अनाज का विकल्प–डॉ० शिखा चौधरी 116
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न–डॉ० ज्योति गौतम 119
बौद्ध वाङ्मय और बुद्ध की प्रासंगिकता–अर्चना 122
लोक साहित्य में विरहाभिव्यक्ति–श्रीमती अर्चना वर्मा; श्रीमती लक्ष्मी देवी 125
इतिहास के आइने में स्त्री विमर्श–डॉ० शैलेन्द्र सिंह 129
स्वयंभू रचित पउमचरिउ में स्त्री चेतना–कुमकुम पाण्डेय 132
लोकतंत्र का चौथा स्तंभ और दलितों की भागीदारी–लाल चन्द पाल 135
शोषण मुक्ति हेतु संघर्षरत : स्त्री जीवन (दलित आत्मकथाओं के संदर्भ में)–आशीष खरे; डॉ० ज्योति गौतम 139

सोनांचल की जनजातीय संस्कृति : समस्याएँ एवं समाधान–अवन्तिका 143

वैदिक भूगोल के आलोक में संसाधन संरक्षण की संकल्पना की विवेचना–डॉ० रत्नेश शुक्ल; रोहणी तिवारी 147

वैज्ञानिक सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक संघर्ष–डॉ० शाद अहमद 152

हिन्दी आलोचना में डॉ. देवीशंकर अवस्थी का कथा क्षेत्र में योगदान–पवन कुमार वर्मा 155

प्रेमचन्द की पत्रकारिता और जीवन दृष्टि–डॉ० नलिनी सिंह 158

उदयपुर जिले की देवास परियोजना का जनजातिय जनसंख्या के सन्दर्भ में पारिस्थितिकीय अध्ययन–रणवीर ठौलिया 161

पश्चिमी राजस्थान के आदिमवर्गों के आर्थिक विकास में इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना का योगदान (विशेष संदर्भ : भील) –डॉ० अश्वनी आर्य; गजेन्द्र शेखावत 166

भारत में बाल मानव अधिकारों का संरक्षण: एक अनुशीलन–सहदेव सिंह चौधरी 171

70 वर्षों में मानव अधिकार की उपलब्धियां एवं चुनौतियां–डॉ० ऋतेश भारद्वाज 176

शिक्षा और समाज का अन्त:सम्बंध–डॉ० निशा वालिया 181

बिहार में सामाजिक आन्दोलन के उभरते लहर (1960-2015) : एक अध्ययन–विजया वैजयंती 184

स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 188

कोविड-19 के दौर में भारत-नेपाल संबंध–आशुतोष कुमार 190

भारत एवं हिन्द महासागर की भू-राजनीति–सत्येन्द्र सिंह 194

भारतीय संस्कृति और तुलसीदास–डॉ० संजय कुमार; डॉ० सरिता 198

भवानी प्रसाद मिश्र की प्रतिनिधि कविताओं में गाँधी-दर्शन–डॉ० (श्रीमती) सविता मिश्रा; अंतिमा गुप्ता 201

वर्तमान परिदृष्य में हरियाणा के परम्परागत माध्यमों के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया–डॉ० दिलावर सिंह 205

कोरोना संकट में सेक्स वर्कर्स के मानवाधिकार–डॉ० पिंकी पुनिया 209

रायपुर संभाग में कृषि उपज मंडियों की कार्य प्रणाली का अवलोकन–डॉ० गिरजा शंकर गुप्ता 214

श्रीमद्‌भागवत के अनुसार ऋषियों की कथाओं का अध्ययन–सीमा चिनप्पा; डॉ० वेदप्रकाश मिश्र 217

देश के युवाओं के लिए आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक पाठ्यक्रमों का महत्व–शिवानी सिंह 222

नारी शोषण के विविध आयाम: संदर्भ गुनाह बेगुनाह–काजल 225

मध्य प्रदेश की गोड़ जनजाति चित्रकला में सूर्योपासना–डॉ० शैलेन्द्र कुमार 227

कुषाण काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी–डॉ० प्रदीप कुमार 229

भारतीय लोकतंत्र के लिए खतरा : पेड न्यूज–अनिल कुमार यादव 233

21वीं सदी के नवगीतकारों में सामाजिक चेतना : वीरेन्द्र आस्तिक, रामनारायण रमण एवं रमाकांत के संदर्भ में–डॉ० रामरती; ममता 237

वर्तमान में संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता–मिथिलेश 242

भारत में नगरीय जीवन एवं सांस्कृतिक चुनौतियां : एक भौगोलिक अध्ययन–गोविन्द सिंह 244

इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीय जीवन–डॉ० निशा जम्वाल 250

पंचायती राज में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता–एक विमर्श : समस्या, समाधान–अनिता कंवर 252

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिले के विशेष संदर्भ में) –प्रतिभा सिंह; डॉ० पी० एन० मिश्र 257

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन –वैशाली उनियाल; प्रो० (डॉ०) सुरेश चन्द्र पचौरी 260

राजा राममोहन राय के सामाजिक सुधारों की मानवीय चेतना–अनिकेत पीयुष सिंह 266

औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण (अलवर जिले के संदर्भ में)–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 269

पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार पर हिंदू महिलाओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन–आभा मिश्रा; डॉ० विजय कुमार वर्मा 272

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण पर शिक्षण रूचि के प्रभाव का अध्ययन –ज्योत्सना रमोला; प्रो० (डॉ०) सुरेश चन्द्र पचौरी 278

बिहार के राजनीतिक इतिहास में सत्येन्द्र नारायण सिंह का योगदान–डॉ० संदीप कुमार 285

अखिलेश कृत 'निर्वासन' उपन्यास में विस्थापन की समस्या–सपना रानी 289

पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त सामयिक प्रश्न—चेतन कुमार 291
बाल-मनोविज्ञान और विज्ञापन : व्यावहारिक अंत: संबंध—शुभांगी 293
मंज़ूर एहतेशाम के उपन्यासों में असामाजिक तत्त्व और साम्प्रदायिकता—सुमन देवी 302
कोविड़ 19 के दौरान मोहल्ला क्लास के प्रति प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का प्रत्यक्षीकरण—डॉ० चन्द्रा चौधरी 305
हिन्दी व्यंग्य और आधुनिक व्यंग्यकार—बिन्दु डनसेना; डॉ० बी० एन० जागृत 308
गुणात्मक शिक्षा के उन्नयन में शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति की भूमिका—सुदर्शन सिंह; डॉ० स्वीटी श्रीवास्तव 310
लोक अदालत का गठन एवं कार्यकरण : एक विश्लेषण—वकील शर्मा 314
पुरुषार्थ अर्थ का स्वरूप और महत्त्व—डॉ० योगिता मकवाना 319
अपराध भूगोल के अध्ययन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग—राजकिरण चौधरी 322
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति—डॉ० रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो० अनिल धर 326
सामाजिक उपन्यासकार के रूप में : नागार्जुन—डॉ० रेखा दुबे; ज्योति नरवाल 330
जलियांवाला बाग हत्याकांड के विविध आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन—डॉ० कुमारी ज्योति 332
चौरी चौरा जनज्वार का राष्ट्रीय आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन—डॉ० सर्वेश चंद्र शुक्ल 335
चौरी चौरा जनक्रांति में स्थानीय जनता तथा स्वयं सेवकों की भूमिका—अभिषेक कुमार तिवारी 339
पर्यावरण दर्शन और नैतिकता—मुकेश कुमार 342
गांधीवादी दृष्टि और आधुनिक राज्य की अवधारणा : एक अनुशीलन—डॉ० अभय कुमार सिंह 346
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की चुनौतियां—सुनीता जांगिड 350
बुक्सा जनजाति और उनके असंतोष के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन—अवधेश कुमार; किन्नर विमर्श; सनोज पी आर 357
मुगलकाल में कार्यरत महिला शिल्पी वर्ग : कतनी/कत्तिनों के विशेष संदर्भ में—मनीषा मिश्रा; डॉ० अमिता शुक्ला 359
सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना की प्रासंगिकता—ललिता देवी 363
मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में सामाजिक एवं पारिवारिक संस्कारों का मूल्यांकन—आलोक कुमार तिवारी 366
नागार्जुन के रचना संसार में सौंदर्यबोध की प्रासंगिकता—संदीप कुमार 369
मानवता का उद्घोष और छायावादी रचना संसार—संजीव कुमार पाण्डेय 371
रमेशचन्द्र शाह का सबद निरंतर में आलोचनात्मक दृष्टि का मूल्यांकन—कृपा शंकर 374
महिला सशक्तिकरण मे राष्ट्रीय महिला आयोग की भूमिका : एक अध्ययन—डॉ० अजित कुमार पाठक 376
स्त्री विमर्श: अर्थ एवं अर्थव्याप्ति—कुमारी अंजना 379
भारत में मानवाधिकार और लोकतंत्र: एक राजनीतिक विश्लेषण—फरीद आलम 381
संत कवि रैदास की वाणी में मानवतावाद—डॉ० मुकेश कुमार 385
प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री कथाकारों की मानवीय चेतना—प्रो० रमेश के० पर्वती 389
छत्तीसगढ़ के श्रमिकों में कोविड माहामारी के दौरान पलायन एंव चुनौतियां (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में)
—संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ० रीना तिवारी 391
राम की शक्ति-पूजा : निराला व राम के संघर्ष की गाथा—प्रो० मन्जुनाथ एन० अंविग 397
कोरोना काल में उत्पन्न तनाव को दूर करने में योग करने की भूमिका—तिलकराज गौड़; डॉ० शालीनी यादव 400
भारत एक कल्याणकारी राज्य के रूप में : एक अनुशीलन—मो० जाहिद शरीफ 405
भारतीय समाज में वृद्ध लोगों की दशा—घनश्याम 408
पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय दर्शन—मयंक भारती 411
दक्षेस : महत्वपूर्ण पड़ाव व वर्तमान प्रासंगिकता—संजय कुमार 414
प्राणायाम : सर्वांगीण विकास का आधार—सुशील कुमार 418
ओटीटी प्लेटफॉर्म का युवाओं पर प्रभाव (एक अध्ययन: दिल्ली के विशेष संदर्भ में)—हर्षवर्धन 422
भूमण्डलीकरण के दौर में लोकधर्मी कविता का संघर्ष—रंजना कुमारी गुप्ता 426
समाज सुधार की दृष्टि से तंज कसती भारतेंदु युगीन व्यंग्य—काजल कुमारी सिंह 431
संस्कृतसाहित्ये व्यक्तिविवेकस्य स्थानम्—डॉ० सुमन कुमारी; डॉ० रामजी मेहता 434

आज का पूँजीवाद और उसका उत्तर आधुनिकतावाद–मन्नु कुमार शर्मा 437
पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन–अभिषेक दुबे; डॉ० (श्रीमती) स्मिता मिश्रा 441
भारत की संसद और राष्ट्रपति मिलकर क्या धारा 370 और आर्टिकल 35A को हटाने की शक्ति रखते हैं?–डॉ० रीता कुमारी 444
काव्य प्रयोजन की साहित्यिक अवधारणा का अध्ययन–डॉ० हेमन्त सिंह कंवर 448
लोक व मिथकीय संरचना में गिरीश करनाड का नाटक हयवदन–सुनील कुमार 451
छत्तीसगढ़ी लोकगाथा की परम्परा में वीरांगना बिलासा केंवटिन–श्री मिथलेश सिंह राजपूत; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 455
सामाजिक न्याय : अवधारणा एवं सिद्धान्त–डॉ० पूरण मल बैरवा; महेन्द्र प्रताप बाँयला 460
प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा (प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक)–सीमा जांगिड़ 468
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत लोकप्रिय एवं एकाकी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन–प्रमोद कुमार वर्मा; डॉ० मृदुला भदौरिया 476
हास्य एवं व्यंग्य का प्रतिरूप सिरमौरी लोक गायन शैली शिटणा–प्रो० पी०एन० बंसल; विनोद कुमार 482
भारत में आत्मनिर्भरता से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उन्नयन–डॉ० सौरभ मालवीय 487
वैश्वीकरण एवं बदलते सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमान (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)–डॉ० मंजु नावरिया 491
सिद्धरामेश्वर : वीरशैव आंदोलन के प्रभावी शिवशरण–डॉ० अंबादास केत 496
हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन–डॉ० रमेश एस० जगताप 500
बाल श्रम-एक विश्लेषण–सतीश कुमार 503
भूमण्डीलकरण और जल, जंगल, जमीन का प्रश्न–डॉ० विनोद मीना 512
आधुनिक वैश्विक परिस्थितियों में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता–डॉ० हरदीप सिंह 516
एम.एन. राय का नव मानववाद: एक विश्लेषण–सोनी कुमारी 520
नारी-स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर की कहानियाँ–सुधा कनकानवर; डा० श्रीनिवास मूर्ति 523
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सन्दर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० सुषमा सिंह; राजपाल सिंह यादव 526
मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास शिल्प : यथार्थवादी बिम्ब का जादुई-अवबोध–डॉ० संजय कुमार लक्की; रमेश चन्द सैनी 531
लोकपाल की भ्रष्टाचार निवारण में सार्थकता–डॉ० योगेन्द्र कुमार धुर्वे 535
दलितों के शैक्षिक उत्थान में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का अवदान–सरिता; प्रो० बी०एल० जैन 538
गाँधीवादी दर्शन में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का स्थान–सोमेश गुंजन 541
आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा प्रतिपादित औचित्य विमर्श–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; गुंजन 543
आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन-अहिंसा एवं विश्व शांति और लोकतंत्र सुधार–डॉ० इन्दु तिवारी 547
पंडित विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में ग्रामीण संस्कृति–अनिरुद्ध कुमार 550
ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से बदलता परिदृश्य का एक अध्ययन: आलीराजपुर जिले के सन्दर्भ में –डॉ० डुंगरसिंह मुजाल्दा 553
जूनियर हाईस्कूल में अध्ययनरत दृष्टिबाधित एवं सामान्य बालकों के समायोजन एवं व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० प्रशान्त शुक्ला 563
हिदी कथा साहित्य में अभिव्यंजित दिव्यांग या विकलांग पात्रों की समस्याओं का विश्लेषण–डॉ० प्रेरणा गौड़ 568
हेमचंद्राचार्य कृत योग-शास्त्र में आसन विमर्श–डॉ० धीरज प्रकाश जोशी 571
प्राकृतिक आपदाओं का कृषकों के जीवन पर प्रभाव : मनरेगा एक विकल्प – समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० सौम्या शंकर; सुनील कुमार 573
शैक्षिक उपलब्धि परसंवेगात्मक बुद्धिका प्रभाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० वन्दना चतुर्वेदी; शिव नारायण 584
भारतीय अर्थव्यवस्था में ई-व्यवसाय की भूमिका एवं प्रभावशीलता का अध्ययन–पूजा जैन 588
मालती जोशी की कहानियों में नारी चित्रण–डायमंड साहू; डॉ० रमणी चंद्राकर 591
युवाओं में नए मीडिया की भूमिका का अध्ययन–डॉ० मधुदीप सिंह; हिमांशु छाबडा 594
किशोर अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्याओं पर एक अध्ययन–डॉ० रिया तिवारी; श्री डोमार यादव 600
वैश्वीकरण और इलैक्ट्रानिक बैंकिंग सेवाओं की उपयोगिता–डॉ० संजय खत्री 606
छत्तीसगढ़ी भाषा : दशा एवं दिशा–डॉ० आंचल श्रीवास्तव; विवेक तिवारी 608

तुलसीदास की समन्वय भावना–डॉ० राजमोहिनी सागर 613

आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व–डॉ० चन्द्र कान्त पांडा 617

वैयक्तिक अनन्यता की समस्या (Problem of Personal Identity)–ऋषिकेश चौहान 626

वर्तमान परिवेश में ई-गवर्नेंस द्वारा प्रशासनिक सुधार एवं सुशासन पर प्रभाव–चन्दना शर्मा 629

वाल्मीकि महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृष्य; हरियाणा के नूंह जिले के विशेष सन्दर्भ में–दीपक 632

आज की आलोचना के समक्ष चुनौतियाँ–डॉ० आस्था दीवान 638

जम्मू - कश्मीर के क्षेत्र के लिए विकास की संभावनाएं–डॉ० अभिषेक आनन्द 640

संस्कृत साहित्य में वर्णित मानव चक्र–डॉ० दीप्ति बाजपेयी; कु० संजू नागर 644

हिन्दी काव्य और उत्तरआधुनिकता–डॉ० तारु एस० पवार 647

शिक्षा के क्षेत्र में न्यू मीडिया का उपयोग: एक अध्ययन (सिरसा के महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के सन्दर्भ) –डॉ० अमित सांगवान; विनोद कुमार 650

काव्य प्रक्रिया में दिवास्वप्न से गुजरता हुआ कवि नरेंद्र मोहन–डॉ० सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी' 655

भारतीय जीवनाधार: कर्मवाद:–डॉ० हिमा गुप्ता 657

आई०एम० क्रौम्बी के अनुसार धार्मिक भाषा का स्वरुप : एक विश्लेषण–डॉ० स्मिता सिंह 660

हिमालय के खस : उत्तराखंड में आर्य जातियों में समाहित होते खस इतिहास के पन्नों में हाशिए पर–डॉ० हरीश चंद्र लखेड़ा 665

स्वच्छ भारत अभियान के प्रचार प्रसार में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका: एक अध्ययन–डॉ० अनिल कुमार 668

आधुनिक भारत में डॉ. अम्बेडकर के धर्मान्तरण का औचित्य–डॉ० युवराज कुमार 672

आरटीआई: प्रभावी शासन का एक औजार–डॉ० ऋचा सिंह 679

"..किसी के जाने के बाद, करे फिर उसकी याद, छोटी-छोटी सी बात" (फिल्मकार बासु चटर्जी से गोकुल क्षीरसागर की बातचीत) –डॉ० गोकुल क्षीरसागर 684

करोना महामारी और प्रसाद के काव्य की मानवतावादी भावना–डॉ० बिजेंद्र कुमार 687

गंगाराम राजी के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक सरोकार–सुनीता; डॉ० रामरती 692

गोंड जनजाति के प्रमुख संस्कार–डॉ० पियुष कुमार सिंह 695

जयश्री रॉय के उपन्यासों में नारी शोषण–भावना देवी 697

पुरुष की संक्रीण मानसिकता के कारण विवाहोपरांत दाम्पत्य-संबंधों में बिखराव को मार्मिक ढ़ंग से चित्रित करता सुनीता जैन का उपन्यास "बिंदु"–नीलम देवी 699

बाल धरोहर एवं समाज कल्याण–डॉ० शिवसिंह बघेल; डॉ० के० बालराजु 703

गीतांजलि श्री के माई उपन्यास में चित्रित समस्याएँ–वीना 707

जिला रीवा के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक प्रेरकों एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –राजेश कुमार यादव; डॉ० पतंजलि मिश्र 709

नई कविता में सौंदर्य-चेतना–डॉ० संतोष धोत्रे 713

भारत - राष्ट्र राज्य बनाम सभ्यतामूलक राज्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० जय प्रकाश खरे 717

मध्य एशिया में चीन-रूस संबंध: सहयोग और अविश्वास–गुरदीप सिंह 720

मानवाधिकार और आदिवासी–प्रो० प्रशांत देशपांडे 724

महाविद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक प्रशिक्षकों की सेवा संतुष्टि की भूमिका–अश्वनी कुमार मिश्र; डॉ० सुनील कुमार सेन 729

रीवा जिले में बी०एड० एवं डी०एल०एड० प्रशिक्षुओं की मानवाधिकार जागरूकता का उनकी जीवन शैली से सम्बन्ध का अध्ययन –अरूण कुमार; डॉ० पतंजलि मिश्र 732

भारतीय बैंकिंग में ग्राहक शिकायत निवारण नीति–रमनदीप कौर 736

विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना के लिए शिक्षा का महत्त्व–डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी 740

वेदों के विषय में आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण–सुनील कुमार 743

जूड़ो में स्थिर संतुलन पर वजन वर्ग का प्रभाव–चन्द्रशेखर बांधें; डॉ० राजीव चौधरी 749

बंगला काव्य और गांधी जी–डॉ० राम बिनोद रे 754

मानव जीवन में वनस्पतियों का महत्व (वैदिक साहित्य के आलोक में)—डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 760
वैदिक काल में स्थानीय - प्रशासन का विकास—डॉ० रितु तिवारी 764
साहित्य में थर्ड जेंडर: हाशिये की दुनिया—कृष्णा कुमारी 767
निराश्रित एवं पारिवारिक किशोर विद्यार्थियों में “आत्मविश्वास”—श्रीकृष्ण जांगिड़; डॉ० अखिलेश जोशी 770
सांसद निधि के उपयोग में पारदर्शिता का अध्ययन—यशोदा पटेल; डॉ० आयशा अहमद 774
मन्नू भंडारी की कहानियों में नए जीवन मूल्यों का चित्रण—प्रा० डॉ० दिग्विजय टेंगसे 777
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व—डॉ० चंद्रकांत पंडा 780
नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में साम्राज्यवादी विचारधारा का अनुशीलन—अजय कुमार 788
हिन्दी साहित्य में ललित निबंधों की मौलिकता—प्रदीप कुमार तिवारी 792
घनानंद काव्य का भाषा-शिल्प सौन्दर्य—डॉ० तृप्ता 795
भारत में सु-शासन और उसके समक्ष चुनौतियाँ—डॉ० सुरेन्द्र मिश्र 798
आर्थिक विकास बनाम संस्कृति और पर्यावरण : भारत के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—एन राजेन्द्र सिंह 804
महात्मा गांधी की ग्राम-स्वराज्य की अवधारणा : एक अध्ययन—मोनिका भाटी 808
समकालीन काव्य सृष्टि में पर्यावरण दृष्टि—शाहिद हुसैन; डॉ० श्रद्धा हिरकने 811
योग-शिक्षा की अभिनव विधियाँ: हिंदी-भाषी यौगिक-वर्णमाला-चार्ट की रचना एवं परिवर्धन—मनीष कुमार; पूनम पंवार; परन गौड़ा 816
जगदीश चंद्र माथुर के नाटकों में समाज में नारी का महत्व—स्मिता शर्मा; डॉ० चित्रा 826
बेरोजगारी की राजनीतिक-यथार्थ (अखिलेश के ‘अन्वेषण’ उपन्यास के संदर्भ में)—बर्नाली नाथ 829
भारतीय उपभोक्ता और उत्पाद एवं सेवा प्रदाता कंपनियों के अंर्तसंबंधों में डिजिटल मीडिया की भूमिका—डॉ० आदित्य कुमार मिश्रा 832
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति—डॉ० रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो० अनिल धर 836
उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन शिक्षा, कौशल विकास एवं क्षमता संवर्धन- वर्तमान परिदृश्य, भावी चुनौतियां एवं अवसर —डॉ० संजय सिंह महर; डॉ० हेमंत बिष्ट 840
छत्रपति शिवाजी महाराज के दृष्टिकोण से स्त्री—डॉ० हेमलता काटे 854
भ्रष्टाचार से लड़ाई और अन्ना हजारे का नेतृत्व—आलोक तिर्की 857
राजनीतिक-जागरुकता की शक्ति एवं महत्त्व—हामिद अली 860
भारतीय लोकतंत्र में मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक: एक अध्ययन—डॉ० जोनी इम्मानुएल तिरकी 863
बिहार की राजनीति में बदलाव की अपेक्षाएँ: एक अध्ययन—कृष्णदेव राय 866
बिहार में सुशासन और दलित सशक्तिकरण : एक अध्ययन—प्रभात आनन्द 868
केन्द्र - राज्य सम्बंध : बदलते परिदृश्य—चन्द्रभान सिंह 872
विमर्श एवं विद्या केंद्रित आलोचना—श्रीमति मीतू बरसैंया; डॉ० श्रीमती आँचल श्रीवास्तव 878
विकसित और विकासशील राष्ट्रों में बुजुर्गों की देखभाल: एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य—डॉ० स्मिता राय; डॉ० भूपेन्द्र बहादुर सिंह 881
भिण्ड अंचल की सामाजिक व्यवस्था का इतिहास : एक अध्ययन—डॉ० शालिनी गुप्ता 886
जनजातीय समुदाय में तीज त्यौहार एवं परिवर्तन का विश्लेषण (छ.ग. राज्य की मुरिया जनजाति के विशेष संर्दभ में)—डॉ० ममता रात्रे 890
स्वामी विवेकानन्द : सामाजिक विचारक के रूप में—प्रेमलता 893
संस्कृत नाट्यशास्त्र पर कालिदास की शैली का प्रभाव—डॉ० अवधेश कुमार यादव 895
पितृसत्तात्मक व्यवस्था और नारी : अप्प दीपो भव—डॉ० जागीर नागर 898
समाज में निरन्तर दोयम दर्जे की अनुभूति—डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 903
पंजाब नाटशाला : नाट्य मंचन का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रंगमंच—डॉ० सुनीता शर्मा 909
विद्यार्थियों में परीक्षा दबाव को कम करने में योग व ध्यान की भूमिका—शैली गुप्ता; डॉ० मंजू शर्मा 914
शोभाकरेण अलङ्कारसर्वस्वखण्डनं जयरथमतमण्डनञ्च—डॉ० प्रीतम रुज 916
हिंदी आलोचना का समकालीन परिदृश्य—अमित डोगरा 921
प्रेमचंद पूर्व कहानियों की परम्परा—डॉ० नारायण 924
स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक पुनर्जागरण में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति का अवदान—डॉ० आरती कुमारी 929

भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय भाषाओं की भूमिका–डॉ० गीता सहाय 932

नई शिक्षा नीति 2020–डॉ० गवित माधव हरि; गोपाले यशवंत काशीनाथ 934

नई शिक्षा नीति और प्रक्रिया उम्मीद : चिकित्सक अध्ययन–डॉ० कविता सालुंके 936

नई शिक्षा नीति 2020–डॉ० बबीता बी० शुक्ला 939

शिक्षा पर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के बुनियादी विचार–डॉ० नागोराव शालिग्राम डोंगरे 943

नए श्रम कानून का सामाजिक प्रभाव–डॉ० माधव के० वाघमारे 946

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक दृष्टिक्षेप–श्रीमती थोरात अनिता भास्कर 949

भारत की नई शिक्षा नीति - 2020–डॉ० रंजना राजेश सोनावने 952

चिकित्सकों के बीच भावनात्मक बुद्धि में लिंगभेद का अध्ययन–डॉ० साहेबराव यू० अहिरे; डॉ० जी० बी० चौधरी 955

नई शिक्षा नीति - 2020 और नए श्रमिक कानून: नई शिक्षा नीति 2020 का डी. एड्. व बी. एड्. कोर्सेस पर प्रभाव: एक अनुशीलन–डॉ० अमोल शिवाजी चव्हाण 959

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का शिक्षको को सक्षम बनाने मे योगदान–प्रताप भाऊसाहेब आत्रे 964

चित्रा मुद्‌गल कृत उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में नारी जीवन (विज्ञापन जगत के सन्दर्भ में)–डॉ० शशी पालीवाल 967

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव–अनूप कुमार सिंह 971

श्रीलाल शुक्ल कृत उपन्यास अज्ञातवास में ग्रामीण एवं शहरी जीवन : एक अध्ययन–डॉ० अखिलेश कुमार वर्मा 974

परमार अभिलेखों में संदर्भित स्थलाकृतियों से सम्बन्धित स्थलनाम एवं उनका अभिधान–डॉ० रागिनी राय 977

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता : एक दृष्टि–डॉ० शिवा श्रीवास्तव 981

वित्तीय समावेशन की ग्रामीण रोजगार में भूमिका : एक दृष्टि–उज्ज्वल चतुर्वेदी 985

न्यू मीडिया की नजर से कोविड-19 से जूझते परिदृश्य में शिक्षा जगत का बदलता परिदृश्य–डॉ० शैलेश शुक्ला

चार्वाक दर्शन–डॉ० सरोज राम 993

असगर वजाहत व्यक्तित्व-कृतित्व–रमेश नारायण; डॉ० सविता तिवारी 997

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में प्रकृति का स्थाई अस्तित्व–डॉ० मधु दीप सिंह; जितेंद्र सिंह 1002

भारत में अपार्टमेन्ट संस्कृति की यात्रा : समाजशास्त्रीय पाठ–डॉ० विमल कुमार लहरी 1010

आदिवासी विमर्श–डॉ० नसरीन जान 1014

राजस्थान मे बढ़ती किसान आत्महत्या के कारण व निवारण: एक अध्ययन–डॉ० मंजु यादव; राजेन्द्र कुमार मीणा 1016

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मानवाधिकार–डॉ० मौहम्मद अबीर उद्दीन 1019

स्ववित्तपोशित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन –अखिलेश कुमार मौर्य 1022

निजी और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों में नौकरी संतुष्टि और शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव के प्रभाव –अलका तिवारी; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1026

ब्रज चौरासी कोस यात्रा : आधुनिक परिपेक्ष में–डॉ० अम्बिका उपाध्याय 1029

आदिवासी देवी अंगारमोती : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में–कु० शोभना देवी सेन; डॉ० बन्सो नुरूटी 1033

हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श–डॉ० भगत गोकुल महादेव 1039

भारत की जनजातियों मे जीवन साथी चुनने की विधियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० हरिचरण मीना 1041

स्ववित्तपोशित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन–कृपा शंकर यादव 1044

उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन–कुसुम देवी 1050

भारत और नेपाल संबंध–डॉ० वंदना वाजपेयी 1053

महाभोज : परत दर परत टूटता विश्वास–विनोद कुमार; प्रो० डॉ० मिन्तु 1057

अरुण कमल की कविताओं में नव युगबोध–मिथिलेश कुमार मिश्र 1060

अनाथ व सनाथ छात्रों के मनोवैज्ञानिक-सामाजिक समस्याओं और शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन –कुलदीप; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1063

पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक चेतना–मुरली सिंह ठाकुर; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 1068

उच्च माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों में जीवन कौशल के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन–प्रो॰ मंजू शर्मा; मधु देवी 1072

वीर रानी के रूप में रुद्रमा देवी का मूल्यांकन–प्रो॰ देवेंद्र कुमार गुप्ता; सुमिति सैनी 1078

हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ॰ प्रियंका नीरज रूवाली; वन्दना सिंह 1081

अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए किए गये सरकारी प्रयास एवं वर्तमान स्थिति–अच्युत कुमार यादव 1086

असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के प्रभाव (चंद्रकुमार आगरवाला के कविताओं के विशेष संदर्भ में)–दिगंत बोरा 1090

असाध्य वीणा का सामाजिक पाठ–डॉ॰ आकाश वर्मा 1094

कोरोना महामारी काल में पुस्तकालयों में डिजिटल तकनीकों का महत्व और उपयोग–डॉ॰ संजय डी॰ रायबोले 1098

असम का लोकनाट्य: पुतलाभिनय या पुतला नृत्य–डॉ॰ परिस्मिता बरदलै 1101

भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री–डॉ॰ आकाश वर्मा 1104

"स्माल सिनेमा" बनाम "मालेगांव का सिनेमा"–डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा 1110

विश्वशांति बनाए रखने में विभिन्न धर्मों की भूमिका–डॉ॰ सुनिता कुमारी 1115

दलित चेतना का प्रतीक झलकारी बाई: एक अनुशीलन–बबली कुमारी 1118

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनसंचार की भूमिका–देवेन्द्र आलोक 1122

चम्पारण के नील संघर्ष में गांधीजी की भूमिका: एक ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन–धीरज कुमार 1126

रबीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी: एक शैक्षणिक स्थिति से शिक्षा पर उनके प्रभाव–गुड्डू कुमार सिंह; डॉ॰ अलका कुमारी 1131

भूगोल में फेनोमेनॉलॉजी : एक चिन्तन फलक–डॉ॰ श्री कमलजी 1138

बदलते परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श के विविध आयाम–प्रोफेसर लता सुमन्त; प्रमोद कुमार सिंह 1140

नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व–प्रोफेसर लता सुमन्त; राजेश कुमार पटेल 1146

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी की राजनीतिक चेतना–डॉ॰ महेन्द्र कुमार त्रिपाठी; नीलम देवी 1151

बुद्ध दर्शन और पश्चिमी मनोविज्ञान–डॉ॰ मनोज कुमार 1154

गांधीजी का स्वराज एवं सत्याग्रह : रंग-भेद नीति के विरूद्ध निर्णायक शस्त्र–निवेदिता कुमारी 1158

मुगल काल में इतिहास लेखन–डॉ॰ राघवेन्द्र यादव 1162

प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार ओदन्तपुरी: एक शैक्षणिक अवलोकन–राहुल कुमार झा 1165

बिहार के पुराने गया जिले के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि–सचिन कुमार 1169

भारत की नई शिक्षा नीति - 2020 : आवश्यकता, प्रभाव एवं चुनौतियां-संजय हिरवे; आशुतोष पाण्डेय 1173

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–तौकीर आलम 1177

प्राचीन बिहार में राजतंत्र एवं गणतंत्र की अवस्थाएँ–डॉ॰ संजीव 1181

''जनहित याचिका'' मानवाधिकारों का संरक्षक : एक अध्ययन–दीपक कुमार कोठरीवाल 1183

प्रगतिशील आंदोलन की जागृति–डॉ॰ आशा तिवारी ओझा 1186

भारत में बाढ़ की समस्या और समाधान–डॉ॰ सीमा सहदेव 1189

भारत सहित अन्य देशों पर कोरोना वायरस का (कोविद-19) प्रभाव–श्रीमती मीनाक्षी 1195

रत्न आभूषण उद्योग : एक भू-आर्थिक विश्लेषण–अक्षय राज 1201

जीएसटी अवलोकन - भारत में माल और सेवा: जीएसटी आईटीसी–डॉ॰ अनामिका तिवारी; डॉ॰ संजय कुमार सिंह 1205

छत्तीसगढ़ कानून, नीतियां और न्यायिक दृष्टिकोण, पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण–आकांक्षा गर्ग अग्रवाल; डॉ॰ (प्रो॰) जे॰ के॰ पटेल 1210

अष्ट चामुण्डा - अग्निपुराण के विशेष सन्दर्भ में–प्रो॰ प्रभात कुमार; कल्पना देवी 1216

पाणिनि अष्टाध्यायी में वर्णित जनपदीय कृषि का विवेचन–डॉ॰ प्रशान्त कुमार; डॉ॰ दुर्वेश कुमार 1221

रीति काल के अग्रदूत: महाकवि केशवदास–सोमबीर 1227

कार्यशील महिलाओं में प्रसव सम्बंधी निर्णायक क्षमता का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ॰ सुशीला; कु॰ आरती 1230

भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में संसदीय सरकार की उपयोगिता–डॉ॰ जगबीर सिंह 1238

भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्या–मुकेश देशवाल 1241

भारत में दो स्तर पर शासन की त्रिस्तरीय लोकतांत्रिक संरचना–सूर्यभान सिंह 1244

अलवर जिले में बदलता सिंचाई स्वरूप एवं उसका कृषि पर प्रभाव (2011 से 2018 तक)–जितेश कुमार घोरेठा; डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद 1250

भारत में संसदीय गरिमा का अवमूल्यन–महेश कुमार 1256

प्रधानमंत्री मोदी के तहत भारतीय विदेश नीति: निरंतरता और परिवर्तन–डॉ० जय कुमार झा 1259

मानव जीवन में भावनात्मक और संवेगात्मक मनोविज्ञान से जुड़े तथ्यों एवं सिद्धांतो की महत्ता: समीक्षा
–डॉ० जया भारती; डॉ० संदीप कुमार वर्मा 1262

भारत में जल संसाधन एवं जल संरक्षण की परम्परागत विधियों का शोधपरक अध्ययन–कविता 1266

मानवाधिकार : साहित्य की समग्र दृष्टि–डॉ० रूपेश कुमार चौहान 1271

निर्धनता उन्मूलन में मनरेगा कार्यक्रम की भूमिका : अनुसूचित जातियों के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० प्रियंका एन० रूवाली; उपमा द्विवेदी 1275

"उच्च शिक्षा स्तर पर महाविद्यालयी शिक्षा में ई-लर्निंग की प्रभावशीलता का अध्ययन"–प्रीति शर्मा; डॉ० मंजू शर्मा 1279

युवा एवं पंचायती राज संस्थाओं का शिक्षा और महिलाओं के सामाजिक विकास में भूमिका–श्वेता पांडेय; डॉ० मंजू शर्मा 1283

भारतीय राष्ट्रीय जागरण में स्वामी दयानन्द का योगदान–विकास 1287

आजादी के बाद के भारत में महिलाओं की स्थिति–डॉ० अनिल कुमार तेवतिया 1290

टेलीविजन संस्कृति और सामाजिक प्रतिबद्धता के अंतर्विरोध–डॉ० मधु लोमेश 1295

प्रगतिशील समाज में अवरोधित महिला शिक्षा–प्रो० (डॉ०) मंजू शर्मा; रुकमणी हसवाल 1298

विवेकी राय कृत उपन्यास शवेत-पत्र: एक ऐतिहासिक दस्तावेज–विभा रीन 1303

हिन्दी गद्य साहित्य में महिला लेखन का महत्त्व–प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मंडल 1306

सुशासन की अवधारणा एवं व्यवहार : भारतीय शासन व्यवस्था के विशेष संदर्भ में–डॉ० सत्येन्द्र कुमार 1309

ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन एवं विकास में पंचायतराज की भूमिका–डॉ० जयराम बैरवा 1312

प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का महत्व–डॉ० विनय कुमार मिश्र 1317

अनामिका के उपन्यासों में स्त्री-जीवन की अभिव्यक्ति–स्वर्णिम शिप्रा 1322

पूर्वमध्यकाल में जातीय प्रगुणन–प्रवीण पाण्डेय 1326

पश्चिमी राजस्थान की हस्तशिल्प कला का संग्रहालयों में योगदान–अजीत राम चौधारी; डॉ० महेन्द्र चौधरी 1329

भारत में सामाजिक न्याय के निर्वचनकर्ता के रूप में मानव जीवन के विकासात्मक पहलुओं पर सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका
–असीम कुमार शर्मा 1332

भारतीय साहित्य की एकता में बाधक तत्व–डॉ० नवनाथ सर्जेराव शिंदे 1336

पं. दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद–डॉ० हरबंस सिंह 1339

क्षेत्रीय विकास, सतत विकास एवं राजनीति - उत्तराखण्ड के लोगो के जनजीवन के विशेष संदर्भ में–सुनील सिंह 1341

किशोर छात्र-छात्राओं की चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
–महेन्द्र कुमार; डॉ० जीतेन्द्र प्रताप 1346

पर्यावरण का सामाजिक पक्ष और केदारनाथ सिंह की कविताएं–डॉ० पूर्णिमा आर 1352

सतनामी संप्रदाय और बाबा जगजीवन दास–डॉ० अनिता सिंह 1356

ऑनलाइन एवं ऑफलाइन खरीददारी में उपभोक्ता संतुष्टि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन
(बिलासपुर शहर के उपभोक्ताओं के विशेष संदर्भ में)–डॉ० अनामिका तिवारी; अंकिता पाण्डेय 1360

समकालीन विमर्शो के समक्ष चुनौतियाँ–संजय सिंह यादव; डॉ० विनोद कुमार 1374

स्वामी सुन्दरानन्द जी : निम के प्रथम विद्यार्थी–गीता आर्या 1377

दार्शनिक चिन्तन की प्रक्रिया – मूल्यान्वेषण या सत्यान्वेषण–डॉ० रेखा ओझा 1381

इच्छाशक्ति और संघर्ष की दास्तान ('मुर्दहिया' के संदर्भ में)–डॉ० विलास अंबादास सालुंके 1386

हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श–डॉ० दायक राम 1388

भारत में मातृभाषा का महत्व एवं चुनौती : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० सोनू कुमार 1392

भारत में किसानों का दशा एवं दिशा : एक अध्ययन–डॉ० राकेश रंजन 1396

छत्तीसगढ़, पर्यटन और नक्सलवाद–डॉ० काजल मोइत्रा; डॉ० रत्नेश कुमार खन्ना; रेखा शुक्ला 1401

दलित महिलाओं के शोषण के विभिन्न आयाम : एक ऐतिहासिक अध्ययन–कुमारी संगीता कुशवाहा 1405

भारत में महिलाओं को प्रदत्त संवैधानिक अधिकार (सैद्धांतिक व व्यावहारिक विश्लेषण)–आशा नागर 1408

पूर्वमध्यकालीन समाज का सामाजिक एवं आर्थिक आधार—डॉ० मनोज सिंह यादव 1414

ज्ञान के विकास के नवाचार का महत्त्व—रजनी कुमारी 1417

न्यायवैशेषिकदर्शनाभिमत मोक्षस्वरूपविमर्श (कौण्डभट्ट विरचित पदार्थदीपिका के विशेष सन्दर्भ में)—डॉ० विश्वेश 'वाग्मी' 1419

सिक्ख दार्शनिक : डॉ. वजीर सिंह का जीवन तथा उनका शैक्षणिक कार्य—हरदीप कौर 1423

संजीव की कहानियों में समकालीन परिदृश्य—डॉ० मधुलता बारा; हेमलता पटेल 1425

शिक्षा के बुनियादी सरोकार और गाँधी-दर्शन—डॉ० किरण कुमारी 1428

अमीरी और गरीबी सैद्धान्तिक प्रक्रिया मानने वाले प्रज्ञा श्री के धनी श्री श्रीलाल शुक्ल—डॉ० मुक्ति मिश्रा 1432

वैश्वीकरण से भारत के चुनावी प्रक्रिया पर पड़ने वाला प्रभाव—विकास रंजन 1439

विज्ञान एवं अध्यात्म—डॉ० रमाकान्त पाण्डेय 1443

फनिश्वर नाथ रेणु की 'मैला आंचल' उपन्यास का नया परिदृश्य—डॉ० हरिकिशोर यादव 1447

भारत का कपड़ा उद्योग: एक अवलोकन एवं स्वास्थ्य समस्याये—डॉ० हितैषी सिंह 1453

भारत में शिक्षक शिक्षा का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—विक्रम बहादुर नाग; डॉ० अज़ीज़ुर्रहमान खान 1456

मध्यकालीन कृषि व्यवस्था में उत्पादन तकनीकी विशिष्टता की महत्ता—अश्वनी कुमार; किशोर कुमार 1460

भारत में दलीय लोकतन्त्र की बदलती भूमिका—डॉ० ब्रह्म प्रकाश 1465

परसाई के साहित्य में भाषा का सौन्दर्य—अजय कुमार मिश्र 1468

बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र के रूप में कौशाम्बी : एक पुनरीक्षण—अनामिका मौर्या 1471

गोदान - कृषक-वेदना का दस्तावेज—डॉ० सुरजीत कौर 1474

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श—डॉ० कविता मीणा 1477

भारतीय युवाओं में बढ़ती आपराधिक वृत्तियाँ- एक बहुआयामी विश्लेषणात्मक अध्ययन—रजनी रंजन सिंह; त्रिलोकी सिंह 1480

ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव—विपिन सहरावत 1491

ऊना के लोकगीतों में वैज्ञानिक व विद्युत वाद्य यंत्र उपकरणों की भूमिका—ममल धीमान; डॉ० परमानन्द बंसल 1494

आर्थिक विकास में उच्च शिक्षा का महत्व—डॉ० गुलाब फलाहारी 1497

इंटरनेट पर उपलब्ध हिन्दी ई-संसाधन, सूचना स्रोत एवं उपकरण: एक सूचनात्मक अध्ययन—डॉ० गौतम सोनी 1499

शहीद भगतसिंह—कुसम राय 1504

जीवन कौशल शिक्षा: एक नया दृष्टिकोण—डॉ० कविता सालुंके; प्रा० ज्योति लष्करी 1506

आधुनिक इतिहास में पुतर्गाल का सागरीय नियंत्रण : राजनैतिक व आर्थिक परिणाम—डॉ० नीलम 1509

मानव जीवन में योग—डॉ० पूजा कुमारी 1514

भारत में बेरोजगारी एवं निर्धनता निवारण-एक जटिल प्रक्रिया—डॉ० अशोक कुमार मिश्र 1517

अवसाद व रोग प्रतिरोध का हथियार है योग—डॉ० सीमा सिंह 1519

स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक अर्थ—डॉ० अपराजिता जॉय नंदी 1525

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में मूल्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन—डॉ० विष्णु कुमार 1527

भगवद्गीता का दर्शन और महात्मा गाँधी—डॉ० स्मिता कुमारी 1532

शिक्षा में कंप्यूटर का महत्व—आलोक तुली 1537

सामाजिक कार्य व्यवसाय में लोक-जीवन एवं उनकी विधियों की प्रासंगिकता—अमित कुमार 1541

आर० के० अर्चना सदा सुमन टुदी—डॉ० रविन्द्रनाथ शर्मा 1541

चौरी चौरा जनक्रांति और ब्रिटिश साम्राज्य की द्वेशपूर्ण न्यायिक प्रक्रिया—डॉ० अजय कुमार सिंह 1545

21वीं शताब्दी भारतीय परिपेक्ष्य में आत्मनिर्भरता अभियान—डॉ० गरिमा सक्सेना 1548

बस्तर संभाग में विद्युत उत्पादन के पारंपरिक स्त्रोतों की संभावना—जितेन्द्र कुमार बेदी; डॉ० काजल मोईत्रा 1551

भारत में विदेशी व्यापार की प्रवृत्ति, संरचना एवं दिशा का अध्ययन—डॉ० मनोज कुमार अग्रवाल 1554

प्राचीन भारतीय वेशभूषा (प्रारम्भ से गुप्तकाल तक)—पीयूष पाण्डेय 1558

विचित्र नाटक में छंद योजना—मनिंदर जीत कौर 1562

समकालीन भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन—डॉ० हेमलता बोरकर वासनिक 1565

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की नारी पात्रों में निहित लोककल्याण की भावना—प्रतिभा झा 1572

हरियाणा की चुनावी राजनीति में मतदान व्यवहार का निर्धारण—राजीव वर्मा; डॉ० तिलक राज आहुजा 1575

कबीर की विचारधारा और उनकी जन-पक्षधरता—डॉ० धनंजय कुमार दुबे 1580

श्रीमद्भगवद्गीता तथा मनुस्मृति में सदाचार अनुशीलन—प्रवीण कुमार 1586

सगुण कवि तुलसीदास के काव्य - सिद्धान्त—मधु अरोड़ा; अर्चना कुमारी 1590

महावीरचरिते तात्कालिक – समाजसंस्कृती—अनिता कौशिक: 1594

गरुड पुराणे कुष्ठ रोग: एकं विवेचनम्—संजय: कुमार: 1599

सिक्कों की उत्पत्ति, विकास एवं उनका महत्त्व—अंजू मलिक 1602

शक्तिपात विद्या की दार्शनिक रूपरेखा—मनीष कुमार; डॉ० बिमान पॉल 1605

स्मृति विकास में योग दर्शन की भूमिका—प्रमोद कुमार; डॉ० पारन गौड़ा 1609

पं. बस्तीराम के काव्य में मानवतावाद—पूनम 1612

हरियाणवी लोकगीतों में यथार्थ-चित्रण—सुमन 1616

प्रवासी महाकवि हरिशंकर 'आदेश' के महाकाव्यों में सौंदर्य-चित्रण—डॉ० मनोज कुमार; डॉ० विकास कुमार 1619

प्राचीन भारत में 'युद्ध एवम् शांति' नैतिकता या अनैतिकता के संदर्भ में—डॉ० आरती यादव 1622

शारीरिक फिटनेस तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन : कुमाऊं क्षेत्र के जनजातीय तथा शहरी छात्रों के सन्दर्भ में—डॉ० रश्मि पंत 1625

सोशल मीडिया और फेक न्यूज का जम्मू के युवाओं पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—अरविंद 1630

कौटिल्य का राजनीतिक दर्शन—संतोष कुमार साह 1634

राजस्थान के लोकजीवन में लोकनृत्य की परंपरा एवं स्वरूप—नारायण सिंह 1637

साठोत्तरी हिन्दी प्रमुख ऐतिहासिक एकांकीयाँ—रमेश चौहान; डॉ० एस०के० पवार 1641

मिथिला की लोक कला 'सिक्की' एक परिचय—शंभू कुमार गुप्ता 1645

भारतीय आर्थिक नियोजन में उपेक्षित किंतु प्रासंगिक : एकात्म अर्थचिंतन—धीरज कुमार पारीक 1647

मीरा कांत के नाटक : द्वन्द्व के संदर्भ में—गुरप्रीत कौर 1651

यात्रा साहित्य में हिमाचल : संदर्भ और प्रवृत्ति—डॉ० सुनीता शर्मा; श्वेता शर्मा 1653

कुण्ठा : बद्री सिंह भाटिया के कथा-साहित्य के संदर्भ में—सुषमा देवी 1658

प्रयाग, कुंभ एवं भारतीय समाज—पूजा 1661

तीन एकांत : कहानी और नाट्य रूपांतरण—चन्दन कुमार 1664

मानवीय संघर्ष की महागाथा ...रंगभूमि—डॉ० अमिता तिवारी 1668

राजस्थान मे जनशिकायत निवारण-तंत्र और ई-गवर्नेंस—विनोद कुमार 1671

पूर्वोत्तर का यथार्थ : वह भी कोई देश है महाराज—स्वाति चौधरी 1680

योगोपनिषदों में उद्धत प्रणव: एक विवेचन—नम्रता चौहान; डॉ० शाम गणपत तिखे 1682

मासिक धर्म के पूर्व योगाभ्यास का महत्व: एक अध्ययन—नेहा सैनी; डॉ० शाम गनपत तीखे 1688

स्वप्रबन्धन में चित्तशुद्धि की भूमिका: महर्षि पतंजलि एवं महत्मा बुद्ध के संदर्भ में—अखिलेश कुमार विश्वकर्मा 1693

चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित नारी-जीवन : स्वरूप, संघर्ष और अस्मिता की खोज—दीक्षा कोंवर 1697

भाषाविज्ञान का अन्य ज्ञान- विज्ञान से संबंध—डॉ० वंदना शर्मा; डॉ० वीरेंद्र सिंह 1700

कश्मीरी विद्वानों का संस्कृत साहित्य को योगदान—मीना देवी 1703

कृषि-क्षेत्र में तकनीकी परिवर्त्तन हेतु विभिन्न समस्याओं का अध्ययन—अरुण कुमार 1706

राष्ट्र निर्माण में भारतीय संसद की भूमिका: एक अवलोकन—डॉ० सुनीता मंगला; डॉ० निवेदिता गिरि 1709

राहुल का बौद्ध दर्शन और मानवतावादी सन्दर्भ—सत्य प्रकाश पाण्डेय 1715

प्रवासी मजदूरों का अपने घर की ओर हो रहा पलायन: इससे निर्मित चुनौतियां एवं अवसरों का अध्ययन—डॉ० लक्ष्मीकांत शिवदास हुरणे 1719

भारत में प्रवासी श्रमिकों का वैश्विक महामारी के दौरान पलायन : चुनौतियाँ एवं रणनीति—डॉ० संजू चलाना बजाज 1723

सार्वभौमिक शिक्षा दर्शन : श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन—डॉ० अनिता जोशी; सुनीता जोशी 1727

छत्तीसगढ़ के नवगीतकारों के नवगीतो में राजनीतिक विडम्बनाएँ–डॉ॰ स्वामीराम बंजारे; शैलेन्द्र कुमार साहू 1732

बौद्ध दर्शन में ध्यान का स्वरूप–धनंजय कुमार जैन; डॉ॰ संतोष प्रियदर्शी 1736

भविष्य के भारत में प्राचीन भारतीय विज्ञान की भूमिका–डॉ॰ विजय कुमार 1741

भारत में कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन–चिरन्जी लाल रैगर 1745

भारतीय हिंदी साहित्य में किसानों की त्रासदी–होशियार सिंह 1750

इन्टरनेट और मोबाइल के व्यसन से मुक्ति में योग की उपयोगिता–कृष्णाबेन संजयकुमार ब्रह्मभट्ट; डॉ॰ बिमान पॉल 1753

1857 की क्रांति के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अमित कुमार; राजेश कुमार 1757

'भोलाराम का जीव' व्यंग्य-रचना में अभिव्यक्त सामाजिक विसंगतियाँ–चुन्नीलाल 1761

चंद्रकांता उपन्यास ''कथा सतीसर'' में कश्मीर समस्या के विविध आयाम–सुखबीर कौर 1764

बिहार का कृषि रोड मैप: किसानों के समग्र विकास का प्रतीक–दीपक कुमार झा 1766

मानसिक स्वास्थ्य के संवर्द्धन में संगीत की भूमिका: शिक्षकों के विशेष सन्दर्भ में विवेचनात्मक अध्ययन–अलका सिंह 1772

किसान अस्मिता का संकट और 'फाँस'–डॉ॰ बिजेन्द्र कुमार 1777

ध्रुवस्वामिनी: प्रसाद की नयी संकल्पना–डॉ॰ बिजय रवानी 1781

आर्थिक विकास और पर्यावरण–श्रीमती कविता 1785

नई शिक्षा नीति, 2020 के आधार पर उच्च शिक्षा में परिवर्तन–डॉ॰ रवींद्र कांबले 1789

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नयी तालीम के तत्व अनुसार स्कूली छात्रों में व्यवसाय शिक्षा के लिए सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उपयोजन–श्रीमती भावना पाटीलबुवा राजनोर; डॉ॰ संजीवनी राजेश महाले 1792

नई शिक्षा नीती 2020 के साथ पढेगा भारत–डॉ॰ दयाराम दुधाराम पवार 1798

वंचना से विकास की ओर शैक्षणिक संदर्भ में विविधता का अध्ययन : एक नीतिगत समझ–मांडवी दीक्षित 1801

प्राचीन मूर्तिशिल्प में पार्वती: विश्लेषणात्मक अध्ययन–राजेश कुमार जाट 1805

गरासिया जनजाति की धार्मिक अलौकिक शक्तियाँ: एक विवेचन–गोगराज चौधरी 1810

लोक-नीति और राष्ट्र निर्माण: भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल्यांकन–मोहम्मद राशिद खान 1814

वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण- बाधाएँ एवं सुझाव–डॉ॰ उमाशंकर त्रिपाठी 1819

संस्कृत नाट्य शास्त्र में वर्णित नायक-नायिका और महाकवि कालिदास की रचनाओं पर उसका प्रभाव–तरूण कुमार सिंह 1822

भारत में चुनाव, लोकतंत्र और मीडिया–प्रतिभा सिंह 1825

मानवता के सरोकार और अज्ञेय का काव्य–माधुरी शर्मा 1827

भारतीय योग परम्परा एवं नाथपंथ : एक तुलनात्मक अध्ययन–कुँवर रणंजय सिंह 1833

छत्तीसगढ़ के लोक गीत और नारी सशक्तिकरण–डॉ॰ तृषा शर्मा; डॉ॰ सुधीर शर्मा 1836

कुलिश की दृष्टि में राजनीति और पत्रकारिता–डॉ॰ जितेन्द्र द्विवेदी 1839

हिंदी साहित्य में काल क्रमानुसार अभिजात्य एवं लोक का संबंध–सचीन्द्र नाथ 1842

नाट्यशास्त्र में वर्णित संगीत का स्वरूप–अशोक बैरागी; डॉ॰ दीपिका श्रीवास्तव 1845

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में नारी जीवन–राधा शर्मा; डॉ॰ स्नेहलता निर्मलकर 1848

हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रधर्म: एक विमर्श–सूर्य प्रकाश मिश्र 1852

कोविड-19 संक्रमण एवं संतुलित आहार–डॉ॰ स्नेह लता 1854

महिलाएँ एवं सामाजिक न्याय - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ॰ दिलीप कुमार सोनी 1858

माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव: एक अध्ययन–विमला कुर्रे; डॉ॰ सुनील कुमार सेन 1862

इक्कीसवीं सदी की कहानियों में चित्रित वर्त्तमान परिदृश्य–डॉ॰ पठान रहीम खान 1869

राजस्थान में पशुपालन का महत्व: एक भौगोलिक मूल्यांकन व विश्लेषण–नीलू चतुर्वेदी 1873

हिन्दी लघुकथा में वृद्ध संवेदना का चित्रण–सरिता कुमावत 1878

रीवा सम्भाग में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों में पर्यावरण चेतना: एक भौगोलिक अध्ययन–अरूणेन्द्र बहादुर सिंह; सितेश भारती 1882

मानव जीवन मे आकांक्षा एवं आकांक्षा स्तर की उपदेयता–विनोद कुमार; डॉ॰ कुमुद त्रिपाठी 1886

प्रवासी जीवन की अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में परम्परा और प्रगति का अध्ययन–सोनी यादव 1890
नरेश मेहता द्वारा रचित धूमकेतु और अरण्या का विवेचनात्मक अध्ययन–अशोक कुमार यादव 1893
''वर्तमान सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता''–डॉ० बन्दना सिंह 1896
काशीनाथ सिंह की कहानियों में यथार्थवाद का चित्रण–देवव्रत यादव 1899
उच्च शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–डॉ० ममता मणि त्रिपाठी 1902
नैषधीयचरितम् महाकाव्य में नल के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ० अमृत कौशल 1905
मीनाक्षी स्वामी के उपन्यास 'भूभल' में स्त्री चेतना–विजय कुमार पाल 1909
डॉ० नगेन्द्र द्वारा रस निष्पत्ति के सम्बन्ध में मौलिक विचारों का अध्ययन–विशाल मिश्र 1913
हिंदी साहित्य में स्त्री -विमर्श–डॉ० दिनेश श्रीवास 1916
राजस्थान के बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी कृषि जलवायु प्रदेश में फसल प्रतिरूप परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन–अमिता बाई यादव 1919
जैन-तीर्थ-स्थलों से जुड़े प्रबन्धन में स्वार्थ-परक राजनीति का प्रवेश–पवन कुमार जैन 1926
कुसुम अंसल साहित्य में पारिवारिक रिश्तों का बदलता स्वरूप–डॉ० विक्रम सिंह; डॉ० सुनीता 1928
"मुरैना जनपद के मन्दिरों में प्रतिबिम्बित प्राचीन भारतीय मन्दिर स्थापत्य का विकासक्रम"–प्रो० प्रभात कुमार; गौरव सिंह 1930
कोरोना संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव–डॉ० संतोष कुमार लाल 1934
सूर्यबाला की कहानियों में वृद्ध और आधुनिकता के व्यंग्यात्मक पहलू–नरेंद्र कुमार स्वर्णकार 1937
अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में 'जेण्डर पाठ्यक्रम' की आवश्यकता क्यों–वन्दना शर्मा; प्रो० वन्दना गोस्वामी; डॉ० अजय सुराणा 1940
व्याकरण शास्त्रे प्रमाणम्–डॉ० सुभाषचन्द्र मीणा 1943
एक राष्ट्र एक चुनाव: एक विश्लेषण–गुलशन कुमार; डॉ० मानसी सिन्हा 1947
आधुनिक शिक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन–डॉ० सुशील कुमार सिंह 1950
तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल–डॉ० राम टहल दास 1954
हठयोग: आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता–ज्योति शर्मा; प्रो० गणेश शंकर गिरि 1959
कृष्णा सोबती का अंतिम उपन्यास 'चन्ना': विश्लेष्णात्मक अध्ययन–पूजा मिश्रा 1962
नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्या–सूर्यकांत एम०बी० 1966
हरियाणा की प्रतिनिधि हिंदी कहानियां–डॉ० ओम प्रकाश सैनी 1969
भारतीय संदर्भ में आतंकवाद के कारण: एक अध्ययन–सुरेन्द्र प्रसाद 1973
योगिता यादव की कहानियों 'अनहोनी' तथा 'भेड़िया' मे नारी अस्मिता का मुद्दा–प्रेम सिंह 1977
आनंदमठ उपन्यास की समीक्षा–डॉ० प्रीति राय 1980
मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में यथार्थबोध–डॉ० प्रीति राय; हरकेश कुमार 1983
सामाजिक परिवर्तन के वाहक बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर एक अवलोकन–सुरेन्द्र सिंह 1988
डॉ० भीमराव आम्बेडकर का राष्ट्रवाद–डॉ० चन्द्रशेखर आजाद 1992
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल संग्रहण की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन–हरिओम; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा 1995
योगिता यादव के कथा साहित्य में मानवीय मूल्यों की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति–सुमन 1997
हरियाणा पर्यटन:- चुनौतियां एवं सुझाव–राजेश कुमार; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा 2000
नागरिकता (संशोधन) अधिनियम 2019–डॉ० अविनाश कुमार लाल; श्रीमती अविंदना जॉन 2005
"वैदिक मनोविज्ञान"–अनामिका वर्मा 2010
गोंड जनजातीय महिलाओं की स्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण (कांकेर जिला के विशेष संदर्भ में)–डॉ० बन्सो नुरूटी 2013
देवेन्द्र कुमार बंगाली की कविताओं में जनपक्षधरता–डॉ० राम पाण्डेय 2019
गदल का प्रासंगिक-विमर्श–डॉ० रमेशकुमार टण्डन 2022
भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर का अवदान–डॉ० विजय कुमार 2025
दलित स्त्री-अस्मिता का कोरस : सुशीला टाकभौरे की कविताएं–कार्तिक राय 2029
कविता के आइने में थर्ड जेंडर–डॉ० शबाना हबीब 2032
उत्तर प्रदेश की राजनीति में महिला सहभागिता–डॉ० प्रमिला यादव 2038

दलित-विमर्श और रामचरितमानस–प्रो० प्रदीप श्रीधर 2042

लैंगिक (जेण्डर) परिप्रेक्ष्य में अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण–जयंती; डॉ० ज्योति कुमारी 2047

आयु वर्ग एवं लैंगिक भेद का इन्सेफ्लाइटिस से सम्बन्ध : उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में –अमरनाथ जायसवाल; डॉ० साधना श्रीवास्तव 2058

भारतीय विदेश नीति में बदलाव व उभरती चुनौतियाँ–चेतन बहोत 2062

विश्व में बढ़ता प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान–डॉ० सुमन फुलारा 2066

अवध की प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप (19वीं शताब्दी)–गणेश कुमार 2068

विभाजन के केंद्र में गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान–निधि वर्मा 2071

पंजाब में विधायी नेतृत्व के राजनीतिक लक्ष्य (1997-2017)–डॉ० सुनीता रानी 2074

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिलाओं की दशा एवं दिशा–रक्षा सिंह; प्रो० अमिता सिंह 2079

मनरेगा: गाँवों में रोजगार सृजन का सुलभ साधन–राकेश कुमार वर्मा; डॉ० राम सेवक सिंह यादव 2084

संस्कृति, परंपरा और लोक: समकालीन अर्थगत विश्लेषण–प्रवीण कुमार जोशी 2088

हरियाणा की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी व शैक्षणिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन –सुरेन्द्र; डॉ० तिलक राज आहुजा 2091

प्रशासन, शहरीकरण और प्रदूषण–रामावतार आर्य 2098

पूर्वी उत्तर प्रदेश तराई में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की आर्थिक संरचना–डॉ० संजीव कुमार सिंह; सीमा सिंह; डॉ० अभिषेक सिंह 2100

इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का कथात्मक वैविध्य–दीप्ति यादव 2107

बिहार में महिलाओं की प्रशासनिक भागीदारी का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० अनिल झा 2111

शिक्षकों में हास्यवृत्ति और उनकी शिक्षण प्रभावकता–प्रो० वन्दना गोस्वामी; रेखा बागड़ा 2115

दीनदयाल उपाध्याय और मीडिया माध्यम–राजकुमार भारद्वाज 2117

जे. कृष्णमूर्ति की दृष्टि में शिक्षकों, छात्रों तथा समाज के प्रति विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन–डॉ० चन्द्रावती जोशी 2121

भारतीय नारी मुक्ति के संदर्भ में महात्मा गाँधी का योगदान–सुनिता कुमारी 2126

'मोरचे' का समीक्षात्मक अध्ययन (सुषम बेदी के विशेष संदर्भ में)–संगीता यादव 2129

शिक्षक और मूल्य शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–रफत फातिमा; डॉ० नलिनी मिश्रा 2132

यशपाल का स्त्री चिंतन–डॉ० अभिषेक मिश्र 2136

समाज के सजग साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम–श्रीमती पंकज यादव 2140

शिवपुराण में अरण्यवासी एक विवेचना–डॉ० गोपेश कुमार तिवारी 2142

छतीसगढ के कुष्ठ आश्रम और इसकी पुनर्वास योजना का ऐतिहासिक विश्लेषण (धमतरी जिले की शांतिपुर कुष्ठ आश्रम के विशेष संदर्भ में)–रणजीत कुमार; डॉ० बन्सो नुरूटी 2145

छत्तीसगढ़ में बैंको द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में वितरित ऋणों का विश्लेषण: "कृषि ऋणों" के विशेष संदर्भ में –श्रीमती भूमिका शर्मा; डॉ० अर्चना सेठी 2150

करोना काल में बालकों के सामाजिक व शैक्षणिक कौशल विकास में ऑनलाइन कक्षाओं के दुष्प्रभावों का मनोसामाजिक अध्ययन (रीवा जिले के शहरी बालक-बालिकाओं के संदर्भ में)–डॉ० सुनीत कुमार तिवारी; श्रीमती निर्मला तिवारी 2155

कुँवर नारायण की कविताओं में जीवन-बोध–कुमार सौरभ 2161

राजा राम मोहन राय के धार्मिक, सामाजिक सुधार एवं वर्तमान में हिन्दुत्व की अवधारणा : एक समीक्षात्मक अध्ययन –डॉ० श्याम शंकर प्रसाद गुप्ता 2165

मोती लाल साकी का कश्मीर साहित्य को योगदान–परवेजा अखतर 2170

शिक्षक ही समाज का शिल्पकार और मार्गदर्शक–डॉ० कल्पना जैन; डॉ० रत्नेश कुमार जैन 2173

हिमाचल की कहानियों में अवसरवादिता और प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार –डॉ० ममता 2178

रामायण में प्रकृति–डॉ० मौमिता भट्टाचार्य 2182

''जनपद चम्पावत में ग्रामीण व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन''–सन्तोष कुमार सिंह 2185

हिन्दी व्यंग्यालोचन की परंपरा और डॉ. सुरेश माहेश्वरी का योगदान–श्रीमती आँचल श्रीवास्तव; श्रीमती मीतू बरसैंयाँ 2189

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परम्परागत बिरसू का अध्ययन–गोपाल शर्मा 2192

बक्सर से प्राप्त प्राक् मौर्यकालीन मृण्मूर्त्ति कला—मंदीप कुमार चौरसिया 2196

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राचीन भारतीय शिक्षा की चौसठ कलाओं का समावेश—डॉ० श्री प्रकाश मिश्र 2200

'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' में चित्रित जीवन-संघर्ष—डॉ० राम किशोर यादव 2205

हिन्दी सिनेमा के गीतों में सावन और बारिश—डॉ० अनुपमा श्रीवास्तव 2209

पटना महानगर के पूर्वी भाग में आवासीय भूमि उपयोग की गतिशीलता: एक भौगोलिक विश्लेषण—नीता कुमारी झा 2217

कला में अमूर्तन की सीमा: बनारस के सन्दर्भ में विजय सिंह के चित्र का संक्षिप्त अवलोकन—शशि कला सिंह 2223

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं भारतीय विदेश नीति: एक अवलोकन—डॉ० अलका चतुर्वेदी 2227

अज्ञेय के उपन्यासों में व्यक्तिवादी पात्रों की भाषा शैली—डॉ० रानी बाला गौड़; गरिमा वर्मा 2229

'शिवमूर्ति के कथा साहित्य में बदलते समकालीन ग्राम्य जीवन का परिदृश्य'—डॉ० रानी बाला गौड़; मनीष कुमार 2232

मध्यकालीन भारत में भक्ति का वास्तविक और व्यावहारिक पथ और आधुनिक समाज में इसकी प्रकृति और प्रभाव —मिथिलेश कुमार मौर्य; डॉ० अजीत कुमार मिश्रा 2234

सुल्तानपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन —शशि मिश्रा; डॉ० अखिलेष कुमार श्रीवास्तव 2237

फर्रुखाबाद जनपद के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० रमाशंकर 2241

समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध—सोवनी मईड़ा 2244

मधु काँकरिया के 'सलाम आखिरी' उपन्यास में अभिव्यक्त वेश्या जीवन—कुमारी पूनम चौहान 2249

अहिंसा एवम् सत्याग्रह का गांधीवादी दर्शन और युवा—डॉ० अरविंद कुमार 2252

रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन—डॉ० विजय कुमार 2255

छत्तीसगढ़ी कविता की आलोचना में डॉ. बलदेव का प्रदेय—श्रीमती वंदना जायसवाल; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 2258

हल्बा जनजाति के जन्म संस्कार में गतिशीलता एवं परिवर्तन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ के उत्तर बस्तर कांकेर जिला के विशेष संदर्भ में)—डॉ० प्रीति शर्मा; दूजराम टण्डन 2265

स्त्री "मुक्ति" की अवधारणा, "झूला नट" उपन्यास के संदर्भ में—प्रीति 2269

'पिंजरे की मैना' आत्मकथा में चित्रित स्त्री जीवन का यथार्थ—डॉ० निशा मुरलीधरन 2275

वर्तमान भारत में मानवाधिकारों का नारी संदर्भ (उत्पीड़न एवं विधिक संरक्षण)—रजनीकांत दीक्षित 2278

हिंदू मंदिर : अंग, संरचना तथा कार्य प्रणाली—आशुतोष पाण्डेय 2282

हिन्दी कविता में अभिव्यक्त गांधी दर्शन के विविध आयाम—डॉ० वीरेन्द्र सिंह 2285

पटना में बाल श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अवलोकन: एक भौगोलिक अध्ययन—रंजीता कुमारी 2292

बलराम अग्रवाल की लघुकथाओं में कथ्य की विविधता एवं शिल्पगत नवीनता—चन्द्रेश साहू; डॉ० प्रभात रंजन 2299

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सीखने का समग्र वातावरण—डॉ० अर्चना मिश्रा 2302

ग्राम सभा एवं ग्रामीण महिला सशक्तिकरण—डॉ० क्रान्ति प्रकाश 2306

भारतीय परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक शिक्षा की नई नीति 2020—डॉ० प्रिया सोनी खरे; सुनन्दा सिंह 2308

परिवार समाज और राष्ट्र के निर्माण में स्त्री शिक्षा की उपादेयता—डॉ० नम्रता जैन; डॉ० सुगंधा जैन 2312

पर्यावरणीय पर्यटन: सिद्धांत और अभ्यास—ईरा भारद्वाज 2316

गाँधी चिन्तन में सामाजिक रूपान्तरण का नैतिक आधार—महेन्द्र सिंह 2320

भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य रूप—डॉ० राजेश कुमार गर्ग 2325

आदिवासी साहित्य में नारी अस्मिता—गौरव सिंह 2328

बौद्धकालीन शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि—सरोज कुमारी 2333

मोदी काल में भारत का विदेश नीति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—सरिता कुमारी 2339

नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षक शिक्षा के लिए एक चुनौती—शाजिया सुल्तान; पायल शर्मा 2343

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की बुनियादी या बेसिक शिक्षा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता—विनय कुमार; धर्मेंद्र सिंह 2347

भरतपुर रियासत की जनजागृति में यातायात साधनों की भूमिका—नीतू जेवरिया 2351

स्त्री विमर्श के संदर्भ में प्रभा खेतान का उपन्यास 'छिन्नमस्ता'—सरिता कुमारी 2355

विन्ध्याचल के पण्डे: व्यावसायिक एवं धार्मिक पक्ष—प्रिया चौरसिया 2359

महात्मा गांधी की ग्राम विकास दृष्टि—डॉ० विकास यादव 2363

ग्रामीण विकास में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका - महिलाओं के उत्थान के सन्दर्भ में—डॉ० कृष्णदेव कुमार भारती 2366

छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति में डॉ० रमाकांत सोनी के साहित्यों का अध्ययन—सरोजनी डडसेना; डॉ० रेखा दुबे 2369

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन—डॉ० समर बहादुर सिंह 2376

कुसुम अंसल के उपन्यासों में विविध विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त नारी चरित्र का विश्लेषण—नारायण रमण चौधरी 2379

हठयोग परम्परा में वर्णित चारित्रिक तथा व्यवहारिक उत्कर्ष के साधन (वशिष्ठ संहिता तथा घेरण्ड संहिता के विशेष सन्दर्भ में)—पवित्रा देवी; डॉ० गोविन्द प्रसाद मिश्र; डॉ० सुखबीर सिंह 2382

हिंदी समाचार पत्रों के संपादकीय विषय वस्तु का विश्लेषण (दैनिक जागरण एवं नवभारत टाइम्स दिल्ली के विशेष संदर्भ में) —बिमलेश कुमार 2386

पारिजात उपन्यास में सांस्कृतिक मूल्य—डॉ० दीपिका विजयवर्गीय 2391

विवादों को कम करने के लिए तनाव मुक्त कार्य संस्कृति की आवश्यकता—सुश्री कंचन शेखावत 2393

कैदियों की चिन्ता स्तर पर प्रेक्षाध्यान के प्रभाव का अध्ययन—डॉ० निर्मला भास्कर; राजेश भयाना; डॉ० अशोक भास्कर 2395

राष्ट्रीय राजनीति में पर्यावरणीय मुद्दों पर बदलती विश्व सहमति—डॉ० नलिनी लता सचान 2398

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मानवाधिकार—डॉ० पुष्कर पाण्डेय 2401

ग्रामीण युवाओं पर वैश्वीकृत जनसंचार माध्यमों का प्रभाव—विमला देवी 2404

भारतीय संस्कृति और योग—डॉ० सितेश कुमार 2408

भारत-इजरायल : कृषि सहयोग—मनीष कुमार सिंह; डॉ० रामकृष्ण सिंह 2412

भारतीय समाज में नारी की भूमिका—डॉ० स्मिता जायसवाल; डॉ० आर० के० पाण्डेय 2416

अध्यापक शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020—डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 2418

बाबा रामदेव जी का योग एवं दर्शन—डॉ० प्रियंका शुक्ला 2421

वायुपुराण में दर्शन-तत्त्व—डॉ० गंगेश गुंजन 2424

भारतीय समाज - विकलांगता के परिप्रेक्ष्य में—सुमित्रा महरोल 2427

प्राच्य एवं पाश्चात्य शिक्षण पद्धतियों में समन्वय की आवश्यकता—सुनील कुमार उपाध्याय 2429

मौर्य काल से गुप्तकाल तक परिवर्तित होती न्याय व्यवस्था—डॉ० शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी 2431

समग्र ग्रामीण विकास की अवधारणा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन—विवेकानन्द सिंह; प्रोफेसर राम गणेश यादव 2434

सुमित्रानन्दन पंत एवं महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति के विविध रूप का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० श्रवण राम 2437

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का निरीश्वरवाद—डॉ० संजय कुमार मिश्र 2441

शाक्त तंत्र की दृष्टि में ध्यान और उसके सहायक अंग—ममता चौधरी; डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री 2444

भारतीय शिक्षा में एनी बेसेण्ट का अवदान—डॉ० के०डी० तिवारी 2447

बिलासपुर शहर के झुग्गी झोपड़ी निवासरत् लोगों को मिलने वाले शासकीय योजनाओं का अध्ययन—कु० आरती तिर्की; डॉ० ऋचा यादव 2452

'चाक' उपन्यास में नारी विमर्श—श्रीमती गीता सतीश पोस्ते; डॉ० सन्मुख नागनाथ मुच्छटे 2457

शिक्षण के विकास मे तकनीकी और संचार का योगदान—डॉ० दिनेश कुमार 2460

सिद्धियों की वर्तमान में प्रासंगिकता—डॉ० मनोज कुमार टाक 2463

संत आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में संत रैदास—राजेश कुमार यादव 2466

गांधी के राजनैतिक विचार—माया यादव—डॉ० संध्या जायसवाल 2470

मानवीय उत्कर्ष निमित्त योगासन शिक्षण/प्रशिक्षण की अवधारणा (हठयोग परम्परा के विशेष सन्दर्भ में)—जयदेव 2474

स्मार्टफोन के उपयोग का किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव—तुलसी राम; डॉ० चंद्रकांत शर्मा 2477

सोशल मीडिया की तर्कसंगिकता का एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन—डॉ० सेवा सिंह बाजवा 2482

मॉरीशस में हिंदी व गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति—अमित कुमार गुप्ता; प्रो० कनुभाई निनामा 2486

भारतीय समाज और राजनीति में महिलाओं की स्थिति—डॉ० सुषमा कुमारी 2489

औपनिवेशिक बिहार में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा–रश्मि कुमारी 2491
समासे पूर्वनिपाततत्त्वम्–डॉ० अनुप कुमार रानो 2496
बाबासाहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं मानवाधिकार–कन्हैया प्रसाद 2501
कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में सामर्थ्यवान नारी–प्रोफेसर (डॉ०) राजिन्द्र पाल सिंह जोश; अनुराधा कुमारी 2504
बाल साहित्य में कहानी -उपन्यास का योगदान–डॉ० सुषमा कुमारी 2507
समाधि सिद्धि निमित्त प्राणायाम की उपादेयता - एक समीक्षा–मोहित आर्य 2510
हिंदी साहित्य में छायावाद काव्य: प्रकृति का काल्पनिक एवं प्रेमपूर्ण चित्र–अरविन्द कुमार दीक्षित 2513
भारतीय दर्शन में योग का महत्त्व–संजय कुमार 2517
उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–अमिता शुक्ला; डॉ० ममता पंत 2520
अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्व–डॉ० नवल किशोर बैठा 2524
डिजिटल मार्केटिंग: व्यापार और मार्केटिंग का बदलता स्वरुप–डॉ० साद बिन हामीद; डॉ० तनवीर अहसन निज़ामी 2527
दर्शनभेदा:–प्रो० प्रसून दत्त सिंह 2529
पण्डिताक्षमारावमहोदयाया: कथामुक्तावल्या: समाजिकविश्लेषणम्–श्री० विश्वजित् वर्मन 2531
मलयालम के लोक गीत और केरल की संस्कृति–डॉ० सीमा चन्द्रन 2535
दृश्य-श्रव्य सामग्री प्रयोग कौशल–डॉ० सविता राय 2538
वर्तमान समय में गुरुकुलीय शिक्षा की प्रासङ्गिकता–डॉ० श्याम कुमार झा 2544
स्थानीय दलों में महिलाओं की राजनीतिक प्रतिनिधित्व–अभिषेक कुमार 2548
श्री नरेश मेहता के खण्डकाव्यों में चेतना–श्रीमती सुमित्रा यादव 2551
ग्वालियर घराने के प्रमुख स्तम्भ: पण्डित कृष्णराव शंकर पण्डित जी का व्यक्तित्व व कृतित्व–चाँदनी; डॉ० लोकेश शर्मा 2556
'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास में सामाजिक चित्रण–किरण देवी 2561
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला मानवाधिकार एवं उनकी स्थिति–पूनम यादव; प्रो० रणबीर सिंह गुलिया 2565
हरियाणा के प्रसिद्ध सांगी चंद्रलाल भाट की गुरु शिष्य परंपरा–रेखा; डॉ० मुकेश कुमार 2568
प्रो० अभय मोर्य कृत 'त्रासदी' उपन्यास में चित्रित समाज–रीतू; डॉ० सुमन राठी 2572
हरियाणा की सांग कला में श्री खीमचन्द स्वामी का अवदान–योगेश कुमार 2575
कौटिल्य अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों पर याज्ञवल्क्यस्मृति का प्रभाव–डॉ० इशरत सुल्ताना 2579
अयोध्या सिंह उपाध्याय का भाषायी चिन्तन–डॉ० अनिल कुमार 2584
पर्णशबरी : प्रकृति का चिकित्सकीय स्वरूप–पूजा सिंह 2588
आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श–निशु सिंहा; प्रो० अजय कुमार 2593
समाज में लैंगिक असमानता का स्वरूप एवं महिलाओं के सामने आनें वाली चुनौतियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन –सीमा सिंह; प्रो० बन्दना गौड़ 2595
कवि अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रयुक्त विविध काव्य रूप–जसप्रीत कौर चावला–डॉ० राजेन्द्र सिंह 'साहिल' 2603
जनसंख्या का भू-जोतों के आकार एवं संख्या पर प्रभाव: प्रयागराज जनपद का एक प्रतीक अध्ययन–वेद प्रकाश वेदी 2609
इलाहाबाद जनपद में गंगा और यमुना नदी में प्रदूषण का स्तर: एक भौगोलिक अध्ययन–वृजेश कुमार 2615
स्वतंत्रतापूर्व आदिवासी उन्नती के लिए ईसाई मिशनरियों का कार्य–डॉ० शशिकांत गोकुळ साबळे 2619

Globus Press

Self Publishing Proposal Invited

Publish Your Book with ISBN
Fast Track Publication in Afforadable Packages
Send Your Publishing Proposal Now at:
baudhikbharat@gmail.com
Phone: 011-35522994, 22753916
Mobile: 9710050610, 9810050610, 9910050610

स्वयं-प्रकाशन प्रस्ताव आमंत्रित

आई.एस.बी.एन. के साथ अपनी पुस्तक प्रकाशित करें।
किफायती पैकेजों में फास्ट ट्रैक प्रकाशन।
अपना प्रकाशन प्रस्ताव भेजें:
baudhikbharat@gmail.com
Phone: 011-35522994, 22753916
Mobile: 9710050610, 9810050610, 9910050610

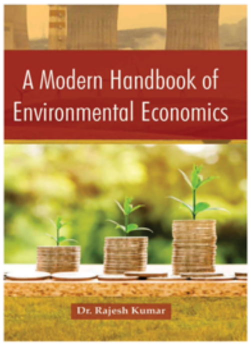
A Modern Handbook of
Environmental Economics
Dr. Rajesh Kumar

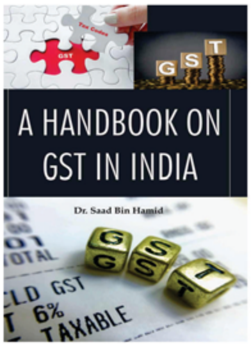
A HANDBOOK ON
GST IN INDIA
Dr. Saad Bin Hamid

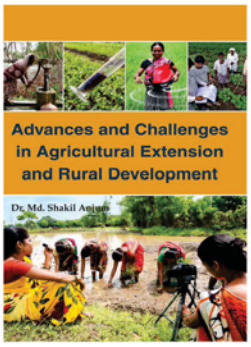
Advances and Challenges
in Agricultural Extension
and Rural Development
Dr. Md. Shakil Anjum

मेखला प्रकाशन

स्वयं-प्रकाशन प्रस्ताव आमंत्रित

आई.एस.बी.एन. के साथ अपनी पुस्तक प्रकाशित करें।
किफायती पैकेजों में फास्ट ट्रैक प्रकाशन।
अपना प्रकाशन प्रस्ताव भेजें:
baudhikbharat@gmail.com
Phone: 011-35522994, 22753916
Mobile: 9710050610, 9810050610, 9910050610

Self Publishing Proposal Invited

Publish Your Book with ISBN
Fast Track Publication in Aforadable Packages
Send Your Publishing Proposal Now at:
baudhikbharat@gmail.com
Phone: 011-35522994, 22753916
Mobile: 9710050610, 9810050610, 9910050610

भारत-नेपाल
संबंध
डॉ० महेश मंडल

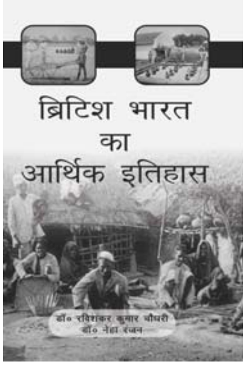
ब्रिटिश भारत
का
आर्थिक इतिहास
डॉ० रविशंकर कुमार चौधरी
डॉ० नेहा रंजन

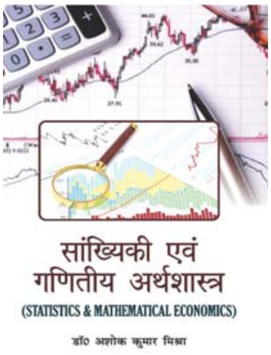
सांख्यिकी एवं
गणितीय अर्थशास्त्र
(STATISTICS & MATHEMATICAL ECONOMICS)
डॉ० अशोक कुमार मिश्रा

Alka Publications

Publish Text books, Edited books, Ph.D. Thesis, Conference Proceedings and Lab Manuals with ISBN from any field of Engineering, Medical Science, Pharmacy, Nursing, Social Sciences, Humanities, Management, Commerce and so on.

Contents development is also available

Send Your Publishing Proposal Now at:
baudhikbharat@gmail.com
Phone: 011-35522994, 22753916
Mobile: 9710050610, 9810050610, 9910050610

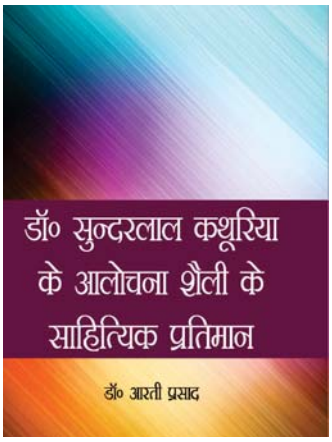
डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया के आलोचना शैली के साहित्यिक प्रतिमान
डॉ० आरती प्रसाद

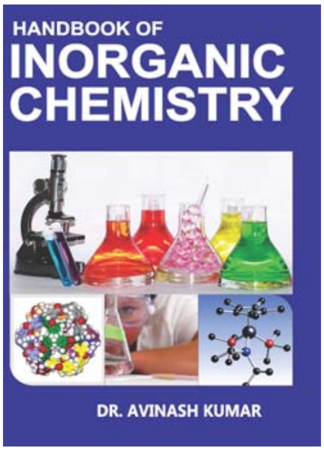
HANDBOOK OF
INORGANIC CHEMISTRY
DR. AVINASH KUMAR

CLINICAL PSYCHOLOGY
BEHAVIOR
PERCEPTION
IQ
PSYCHOLOGY
PSYCHO THERAPY
EGO
COGNITIVISM
EQ
GESTALT
BRAIN
Dr. Sneha Kumari
Dr. Kamta Prasad Yadav

कोरोना संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव

डॉ० संतोष कुमार लाल

M.Com. (Gold Medalist), Ph.D., Principal In-Charge, Sariya College, Suriya, Giridih, (Jharkhand)

भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद भले ही कृषि क्षेत्र हो। लेकिन, वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था में विकास के पीछे मिडिल क्लास और लोअर मिडल क्लास का सबसे बड़ा हाथ है। यही कारण है कि भारत को एक मिडिल इनकम ग्रुप की अर्थव्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है। कोविड-19 के जारी वैश्विक संकट के बीच भारतीय परिदृश्य में आर्थिक दृष्टिकोण से सबसे अधिक चर्चा दो पहलुओं पर हो रही है।

पहला, भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे कमजोर आबादी यानी किसान, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूर, दैनिक मजदूरी के लिए शहरों में पलायन करने वाले मजदूर और शहरों में सड़क के किनारे छोटा-मोटा व्यापार करके आजीविका चलाने वाले लोग।

दुसरा, भारतीय अर्थव्यवस्था में उत्पादन करने वाले यानी वह क्षेत्र जो इस देश में पूंजी और गैर-पूंजी वस्तुओं का उत्पादन करता है। सामान्य भाषा में कहें तो मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर या बिजनेस सेक्टर. दुनियाभर की सरकारें इन दोनों ही पहलुओं पर काम कर रही है। सरकारों ने अपने देश में स्थिति से निपटने के लिए बडेघ पैकेज का एलान किया है।

न्यूनतम स्तर पर थी। रियल जीडीपी के आधार पर 11 साल के न्यूनतम स्तर पर थी। बेरोजगारी की दर पिछले 45 साल में सबसे अधिक थी और ग्रामीण मांग पिछले 40 साल के सबसे न्यूनतम स्तर पर थी। इसलिए बेहतर या होगा कि जारी आर्थिक संकट को समझने के लिए पिछले 2 वर्ष से चल रहे आर्थिक संकट को भी संज्ञान में लिया जाए. तब जाकर कहीं कोविड-19 संकट के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था को दोबारा तेजी से आगे बढ़ाने के लिए एक मजबूत नीति का निर्माण हो सकती है।

वर्तमान की बात करें तो भारतीय अर्थव्यवस्था एक गहरी संकट की तरफ बढ़ रही हैं। विभिन्न प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भारत की आर्थिक वृद्धि दर के संदर्भ में जो आकलन जारी किए है, वे चिंताजनक है।

आईएमएफ, वर्ल्ड बैंक, एडीबी और मूडीज जैसी संस्थाओं ने भारत की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान में एक बड़ी कटौती की है। आईएमएफ, के अनुसार भारत की जीडीपी विकास दर 1.9 फीसदी रह सकती है।

वर्ल्ड बैंक ने दो संभावनाएं जताई है, पहली संभावना यह है कि अगर भारत सही वक्त पर सही तरीके से इसे कंट्रोल करने में कामयाब रहा तो अर्थव्यवस्था में जीडीपी वृद्धि दर 4 फीसदी रहेगी।

अगर संकट गहराता है और लॉकडाउन को आगे बढ़ाया जाता है तब यह वृद्धि दर धटकर 1.5 फीसीदी हो जाएगी. एडीबी (एशियन डेवलपमेंट बैंक) के अनुसार, भारत की आर्थिक वृद्धि दर 2020-21 के लिए 2.5 फीसदी है।

नह है नई समस्या

इन सभी समस्याओं के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था “रिवर्स माइग्रेशन” को देख रही है, अभी यह देश के भीतर ही हो रहा है जहां लोग शहरों से वापस गांव की तरफ लौट रहे है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी यह बड़े स्तर पर संभव है।

उदाहरण के रूप में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका में इमीग्रेशन रोकने के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर कर दिए है, अब आने वाले कुछ दिनों तक अमेरिका में किसी बाहरी व्यक्ति को रोजगार के अवसर प्राप्त नहीं होंगे. यानी लड़ाई संकट के बीच खत्म हो रही नौकरियों को देखते हुए लिया गया है जहां अमेरिकी सरकार अब इनकी जगह स्थानीय लोगों को रोजगार देगी।

इस संकट ने अमेरिका में बेरोजगारी को उच्चतम स्तर पर पहुंचा दिया है. अमेरिका में मार्च महीने के अंत तक कुल 66 लाख से ज्यादा कामगारों ने बेरोजगारी की भत्ते के लिए आवेदन कर दिया था. यह अमेरिका के इतिहास में अब तक बेरोजगारी भत्ते के लिए आवेदन करने वालों की सबसे बड़ी संख्या थी।

रोजगार पर असर

भारत के परिप्रेक्ष्य से बात करें तो सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडिया इकनॉमी (सीएमआईई)के जारी आंकड़ों के अनुसार, लॉकडाउन की वजह से कुल 12 करोड़ नौकरियां चली गई है. कोरोना संकट से जूझ रहे इस तबके के लिए सरकार ने 1.7 लाख करोड़ रूपये का पैकेज जारी किया है।

वैश्विक स्तर पर अमेरिका ने सबसे बड़ा आर्थिक पैकेज अपनी अर्थव्यवस्था के लिए जारी किया है. अमेरिका ने करीब 30 करोड़ लोगों के लिए 2 ट्रिलियन डॉलर यानी कुल 151 लाख करोड़ रूपये का राहत पैकेज जारी किया हैं. यह भारत के कुल बजट के लगभग 5 गुना ज्यादा है. यह अमेरिका की पूरी अर्थव्यवस्था के लिए है।

भारत ने अभी अपने मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर के लिए किसी बड़े पैकेज का एलान नहीं किया है. ऐसी उम्मीद है कि जल्द ही निकट भविष्य में भी बड़े पैकेज का एलान किया जा सकता है. मांग के साथ-साथ अब आपूर्ति आधारित संकट देखने जा रहे उत्पादन क्षेत्र को सुचारू रूप से दोबारा चालू करने के लिए एक बड़े आर्थिक पैकेज की जरूरत पड़ेगी।

केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा जारी हो रहे राहत पैकेज के बीच में दो प्रमुख बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

1. भारत का मिडिल क्लास।

2. आने वाली आर्थिक संकट की बुनियाद।

मिडिल क्लास को चर्चा का केंद्र बिंदु बनाना इसलिए जरूरी है क्योंकि अर्थव्यवस्था में जारी हर संकट के बीच मिडिल क्लास सबसे अधिक कमजोर होता है। सरकारों द्वारा जारी होने वाले राहत पैकेज में यह क्लास शामिल नहीं हो पाता है।

आर्थिक संकट की घड़ी में अक्सर मिडिल क्लास कमजोर होता है और उसका एक हिस्सा अर्थव्यवस्था में गरीब आबादी की तरफ शिफ्ट हो जाता है। वर्तमान में कोविड-19 का संकट भी कुछ ऐसा संकेत दे रहा है।

यह संभव है कि अधिकतर छोटी सैलरी पर काम करने वाला मिडिल क्लास इस संकट में अधिक कमजोर हो और वह लोअर मिडिल क्लास या उससे भी नीचे की श्रेणी की तरफ शिफ्ट हो जाए। आईएमएफ ने भी अपनी रिपोर्ट में इसी तथ्य का जिक्र किया है कि भारत का मिडिल क्लास सिकुड़ रहा है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि संकट के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था में मौजुद मिडिल क्लास की भी आर्थिक परिस्थितियों को प्रमुखता में ध्यान दिया जाए।

अब दूसरा प्रमुख विषय आर्थिक संकट की बुनियाद को सुनने का है प्रश्न यह है कि कोविड-19 की वजह से जारी आर्थिक संकट की बुनियाद और उसके निवारण का केंद्र बिंदु क्या होनी चाहिए? क्या कोविड-19 को ही भारतीय अर्थव्यवस्था की सुस्ती का कारण मानकर अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने की तैयारी करनी चाहिए या फिर पिछले 2 साल से चली आ रही आर्थिक सुस्ती को भी बुनियाद के रूप में लेते हुए किसी नए प्लान पर विचार करना चाहिए?

आज यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि अर्थव्यवस्था का सबसे बुरा दौर क्या होने वाला है हम अभी सिर्फ संभावनाएं जता सकते है। लेकिन यह जरूर स्पष्ट होता जा रहा है कि अर्थव्यवस्था में मांग एवं आपूर्ति आधारित सुस्ती के साथ-साथ बेरोजगारी का भीषण संकट आ रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में कहें तो हमें जान और जहान दोनों बचाना है। लेकिन, साथ अपने लोगों की जीविका को बचाने के आर्थिक मोर्चे पर कुछ बड़े फैसले लेने होगें जारी कोरोना हेल्थ इमर्जेंसी के बाद एक बड़ी इकनॉमिक इमर्जेंसी आने वाली है जो इस संकट से ज्यादा भयावह और कहीं अधिक आर्थिक जानें ले सकती है।

ब्रिटेन की सरकार टैक्स रियायतों, कारोबारों को सस्ता कर्ज, तरह-तरह के अनुदान सहित 400 अरब डॉलर का पैकेज लाई है जो देश के जीडीपी के 15 फीसद बराबर है। बैंक ऑफ इंग्लैंड ब्याज दरें घटाकर बाजार में पंजी झोंक रहा है. कोरोना से बुरी तरह तबाह इटली की सरकार ने 28 अरब डॉलर का पैकेज धोषित किया है, जिसमें विमान सेवा एलिटालिया का राष्ट्रीयकरण शामिल है। इमैनुअल मैकरां के फ्रांस का कोरोना राहत पैकेज करीब 50 अरब डॉलर (जीडीपी का 2 फीसद) का है। स्पेन का 220 अरब डॉलर, स्वीडन 30 अरब डॉलर, ऑस्ट्रेलिया 66 अरब डॉलर और न्यूजीलैंड का पैकेज 12 अरब डॉलर (जीडीपी का 4 फीसद) का है। सिंगापुर अपनी 56 लाख की आबादी के लिए 60 अरब डॉलर का पैकेज लाया है रिकार्ड धाटे, राजस्व में कमी के कारण भारत का राहत पैकेज इसके जीडीपी की में केवल 0.8 फीसदी है जबकि अन्य देश अपने जीडीपी का 4 से 11 प्रतिशत के बराबर पैकेज लाए है। भारत सरकार का करीब 1.7 लाख करोड़ रूपये का पैकेज कोरोना प्रभावितों को सांकेतिक मदद पर केंद्रित है। जिसमें सस्ता अनाज प्रमुख है। जिसके लिए पर्याप्त भंडार है। रबी की खरीद से नया अनाज आ जाएगा, किसान सहायता निधि और अन्य नकद भूगतान स्कीमों की किश्तें जल्दी होंगी, इसके लिए बजट में आवंटन हो चुका है उज्जवला के तहत मुफ्त एलपीजी सिलेंडर के लिए तेल कंपनियों को सब्सिडी भुगतान रोका जाएगा, भारत में भविष्य निधि पीएफ का संग्रह करीब 11 लाख करोड़ रूपये का है, इससे एडवांस लेने की छुट और छोटी कंपनियों में नियोक्ताओं के अंशदान को तीन माह के टालने के लिए इस निधि का भरपूर इस्तेमाल होगा. सरकार के मुकाबले रिजर्व बैंक ने ज्यादा हिम्मत दिखाई है। सभी कर्जों (हाउसिंग, कार, क्रेडिट कार्ड सहित) पर तीन माह तक किश्तों का भूगतान टालने को कहा है। ब्याज दरों में अभूतपूर्व कमी की है और वित्तीय तंत्र में करीब 3.74 लाख करोड़ की पूंजी बढ़ाई है ताकि कर्ज की कमी न रहे। अन्य देशों की तरह भारत सरकार कोरोना के मारे मजदूरों, छोटे कारोबारियों, नौकरियां गंवाने वालों को सरकार कोई नई सीधी मदद नहीं दे सकी है। भविष्यनिधी से मिल रही रियायतों के लाभ केवल 15-16 फीसदी प्रतिष्ठानों को मिलेगें।

‘‘हमारे देश में छोटे-छोटे कारखाने और लधु उद्योगों की बहुत संख्या है। उन्हें नगदी की समस्या हो जाएगी क्योंकि उनकी कमाई नहीं होगी। ये लोग बैंक के पास भी नही जा पाते है इसलिए ऊंचे ब्याज पर कर्ज ले लेते है और फिर कर्जजाल में फंस जाते हैं”

अनौपचारिक क्षेत्रों में फेरी वाले, विक्रेता, कलाकार, लद्यु उद्योग और सीमापार व्यापार शामिल है। इस वर्ग से सरकार के पास टैक्स नहीं आता, लॉकडाउन और कोरोना वायरस के इस पूरे दौर में सबसे ज्यादा असर एविएशन, पर्यटन, होटल सेक्टर पर पड़ने वाला हैं. यह स्थिति सरकार के लिए चुनौतिपूर्ण है अचानक ही सामने एक विशाल समस्या आ खड़ी हुई है। 2008 के दौर में कुछ कंपनियों को आर्थिक मदद देकर संभाला गया। लेकिन, आज अगर सरकार ऋण दे तो सभी को देना पडेगा। हर सेक्टर मे उत्पादन और खरीदारी प्रभावित हुई है, कोरोना वायरस का असल पुरे दुनिया पर पड़ा है, चीन और अमेरिका जैसे बड़े देश और मजबूत अथव्यवस्थाएं इसके सामने लाचार हो गया है. इससे भारत में विदेशी निवेश के जरिए अर्थव्यवस्था व्यवस्थित करने की कोशिशों को भी धक्का पहुंचेगा, विदेशी कंपनियों के पास भी पैसा नहीं होगा तो वो निवेश में रूचि नहीं दिखाएंगी, हालांकि, जानकारों का कहना है कि अर्थव्यवस्था पर इन स्थितियों का कितना गहरा असर पडेगा ये दो बातों पर निर्भर करेगा, एक तो ये कि आने वाले वक्त में कोरोना वायरस की समस्या भारत में कितनी गंभीर होती है और दुसरा की कब तक इस पर काबू पाया जाता है।

दुनिया भर में बचत और राजस्व के रूप में जमा खरबों डॉलर स्वाहा हो चुका है वैश्विक जीडीपी में रोज कमी दर्ज की जा रही है. लाखों लोग अपना रोजगार खो चुके है अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने बताया है कि 90 देश उससे मदद मांग रहे है। आईएलओ के अनुसार कोरोना वायरस की वजह से दुनियाभर में ढाई करोड़ नौकरियां खतरे में है कोविड-19 के कारण चीन से होने वाले आयात के प्रभावित होने से स्थानीय और बाहरी आपूर्ति श्रृंखला के संदर्भ में चिंताएं बढ़ी है सरकार द्वारा कोविड-19 के प्रसार को रोकने के लिये लॉकडाउन और सोशल डिसटेंसिंग जैसे प्रयासों से आद्यौगिक उत्पादन प्रभावित हुआ है। लॉकडाउन के कारण बेरोजगारी बढ़ी है, जिससे सार्वजनिक खर्च में भारी कटौती हुई है। लॉकडाउन के कारण कच्चे माल की उपलब्धता, उत्पादन और तैयार उत्पादों के वितरण की श्रृंखला प्रभावित हुई है, जिसे पुन: शुरू करने में कुछ समय लग सकता है। उदाहरण के लिये उत्पादन स्थगित होने के कारण मजदूरों का पलायन बढ़ा है, ऐसे में कंपनियों के लिए पून: कुशल मजदूरों की नियुक्ति कर पूरी क्षमता के साथ उत्पादन शुरू करना एक बड़ी चुनौती होगी। जिसका प्रभाव अर्थव्यवस्था की धीमी प्रगति के रूप में देखा जा सकता है। खनन और उत्पादन जैसे अन्य प्राथमिक या द्वितीयक क्षेत्रों में गिरावट का प्रभाव सेवा क्षेत्र कंपनियों पर भी पड़ा है। जो सेक्टर इस बुरे दौर से सबसे ज्यादा प्रभावित होगे वहीं पर नौकरियों की भी सबसे ज्यादा खतरा होगा एविएशन सेक्टर में 50 प्रतिशत वेतन कम करने की खबर तो पहले ही आ चुकी है। रेस्टोरेंट्स बंद है, लोग धुमने नहीं निकल रहे, नया सामान नहीं खरीद रहे लेकिन, कंपनियों को किराया, वेतन और अन्य भूगतान तो करना ही है। ये नुकसान झेल रहीं कंपनियां ज्यादा समय तक भार सहन नहीं कर पाएंगी और इसका सीधा असर नौकरियों पर पडेगा, हालांकि, सरकार ने कंपनियों से नौकरी से ना निकालने की अपील है लेकिन इसका बहुत ज्यादा असर नहीं होगा। ''विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री हैंस टिमर ने कहा कि भारत की परिदृश्य अच्छा नहीं है टिमर ने कहा कि यदि भारत में लॉकडाउन अधिक समय तक जारी रहता है तो यहां आर्थिक परिणाम विश्व बैंक के अनुमान से अधिक बुरे हो सकते है उन्होंने कहा कि इस चुनौति से निपटने के लिए भारत को सबसे पहले इस महामारी को और फैलने से रोकना होगा और साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सभी को भोजन मिल सके लॉकडाउन का सबसे ज्यादा असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पड़ेगा और हमारी अर्थव्यवस्था का 50 प्रतिशत जीडीपी अनौपचारिक क्षेत्र से ही आता है ये क्षेत्र लॉकडाउन वे दौरान काम नहीं कर सकता है। वो कच्चा माल नहीं खरीद सकते बनाया हुआ माल बाजार में नहीं बेच सकते तो उनकी कमाई बंद ही हो जाएगी।

भारत को चाहिए कि आर्थिकी को संभालने के लिए भारत में प्रतिभाशाली अर्थशास्त्रियों की एक कमेटी का गठन किया जाए, जिसमें प्रोफेशनल हो और वे भारतीय चुनौतियों के अनुसार देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए चरणबद्ध तरीके से नीतिगत समाधान सरकार के सामने रखें।

अंतरर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्था आईएमएफ ने एक टास्क फोर्स का गठन किया है इस टास्क फोर्स का उद्देश्य है कि बिगड़ती हुयी अर्थव्यवस्था को कैसे पटरी पर लाया जाए। इस टास्क फोर्स में आरबीआई के पूर्व गवर्नर रधुराम राजन भी हैं। रधुराम राजन पहले भी आईएमएफ के साथ रह चुके है और वे एक काबिल अर्थ विशेषज्ञ है। भारत को भी चाहिए कि आर्थिकी को संभालने के लिए भारत में भी प्रतिभाशाली अर्थशास्त्रियों की एक कमेटी का गठन किया जाए। जिसमें प्रोफेशनल हो और वे भारतीय चुनौतियों के अनुसार देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए चरणबद्ध तरीके से नीतिगत समाधान सरकार के समाने रखें। पिछले साल के ही आर्थिकी सूचकांक को देखें तो ऑटोमोबाइल सेक्टर, रियल, लधु उद्योग समेत तमाम असंगठित क्षेत्र में सुस्ती छाई हुई थी।

बैंक एनपीए की समस्या से अब तक निपट रहे है हालांकि, सरकार निवेश के जरिए, नियमों में राहत और मदद देकर अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने की कोशिश कर रही थी पर बहुत अधिक सफलता सरकार को नहीं मिली है। इस बीच कोरोना वायरस के कारण पैदा हुए हालात ने जैसे अर्थव्यवस्था का चक्का जाम कर दिया है न तो कहीं उत्पादन है और न मांग, लोग धरो में है और कल कारखानों तथा दुकानों पर ताले लगे हुए है। यह स्थिति अभी 3 माह तक तो रहेगी ही। कोरोना से लड़ाई अब दोहरी है। ज्यादातर देश सेहत और अर्थव्यवस्था, दोनों का विनाश सीमित करने में जुटें है भारत में संक्रमण रोकने की कवायद जोर पकड़ रही है लेकिन आर्थिक राहत में भारत पिछड़ गया है।

केराना वायरस ने न केवल भारत की बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था की हालत खराब कर रखी है विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना वायरस के कारण भारत की इकोनॉमी पर बड़ा असर पड़ने वाला है। कोरोना के भारत की आर्थिक वृद्धि दर में भारी गिरावट आएगी।

वर्ल्ड बैंक के अनुमान के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2019-20 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर घटकर मात्र 5 प्रतिशत रह जाएगी, तो वही 2020-21 में तुलनात्मक आधार पर अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में भारी गिरावट आएगी जो घटकर मात्र 2.8 प्रतिशत रह जाएगी रिपोर्ट में कहा गया है कि यह महामारी ऐसे वक्त में आई है जबकि वित्तीय क्षेत्र पर दबाव के कारण पहले से ही भारतीय इकोनॉमी सुस्ती की मार झेल रही थी. कोरोना वायरस के कारण इसपर और दवाब बढ़ा है।

दरअसर कोरोना वायरस के कारण देशभर में लॉकडाउन है। सभी फैक्टी, ऑफिस, मॉल्स, व्यवसाय आदि सब बंद है। धरेलू आपूर्ति और मांग प्रभावित होने के चलते आर्थिक वृद्धि दर प्रभावित हुई है। वहीं जोखिम बढ़ने से धरेलु निवेश में सुधार में भी देरी होने की संभावना दिख रही है। ऐसे में अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर में पहुंच सकती है। रिपोर्ट में सरकार को वित्तीय और मौद्रिक नीति के समर्थ की जरूरत पर जोर देने की सलाह दी गई है। चुनौती से निपटने के लिए भारत को इस महामारी को फैलने से रोकने के लिए जल्द से जल्द ज्यादा प्रभावी कदम उठाना होगा। साथ ही स्थानीय स्तर पर अस्थायी रोजगार सृजन कार्यक्रमों पर भी ध्यान देना होगा विश्व बैंक ने आगाह किया है कि इस महामारी की वजह से भारत ही नहीं बल्कि समुचा दक्षिण एशिया गरीबी उन्मुलन से मिले फायदे को गँवा सकता है। इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन ने कहा था कि कोरोना वायरस सिर्फ एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट नहीं रहा, बल्कि ये एक बड़ा लेबर मार्केट और आर्थिक संकट भी बन गया है जो लोगों को बड़े पैमाने पर प्रभावित करेगा।